पतंजलि विश्वविद्यालय

पाठ्यक्रम - बी.ए. संस्कृतम्

(ACCORDING TO NEP)

वर्ष- 2025-26

B.A. SANSKRIT SAHITYAM (ACCORDING TO NEP)

SEMESTER -1

S.No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit L	Credit T	Credit P	Total Credits
1	Discipline Specific Major	BSSAMJ-101	रघुवंशगीताप्रारम्भिकरचनानुवादकौमुद्यः	5	1	0	6
2	Discipline Specific Minor	BSSAMN-102	वर्णोच्चारणशिक्षासन्धिकारकप्रकरणम्	3	1	0	4
3	Inter Disciplinary	BSSAID-103 (1)	प्राचीनभारतेतिहासः (आदितः प्रभृति मौर्यकालपर्यन्तम्)	3	1	0	4
		BSSAID-103 (2)	समाजशास्त्रपरिचयः				
		BSSAID-103 (3)	भारतीयसंविधानम्				
4	Ability Enhancement	BSSAAE-104	Communicative English	1	0	2	2
5	Skill Enhancement/ Internship	BSSASE-105 (1)	योगचिकित्सा–I	1	1	2	3
		BSSASE-105 (2)	Basics Knowledge of Vocal & Instrumental				
		BSSASE-105 (3)	Sanskrit With Technology				
6	Value Added	BSSAVA-106 (1)	सनातनसंस्कृतिबोधः –I	2	1	0	3
		BSSAVA-106 (2)	पर्यावरणविज्ञानम्	0	0	6	
Total Credits							22

SEMESTER -2

S.No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit L	Credit T	Credit P	Total Credits
1	Discipline Specific Major	BSSAMJ-201	शुकनासोपदेशशिवराजविजयाभिज्ञानशाकुन्तलम्	5	1	0	6
2	Discipline Specific Minor	BSSAMN-202	शब्दरूपधातुरूपलिङ्गानुशासनम्	3	1	0	4
3	Inter Disciplinary	BSSAID-203 (1)	प्राचीनभारतेतिहासः	3	1	0	4
		BSSAID-203 (2)	भारतीयसमाजः				
		BSSAID-203 (3)	भारतस्वतन्त्रतासंग्रामस्वातन्त्र्योत्तरभारतम्				
4	Ability Enhancement	BSSAAE-204	Advanced Communicative English	1	0	2	2
5	Skill Enhancement/ Internship	BSSASE-205 (1)	योगचिकित्सा–II	1	1	2	3
		BSSASE-205 (2)	Intermediate Knowledge of Vocal & Instrumental				
		BSSASE-205 (3)	गोविज्ञानम्				
6	Value Added	BSSAVA-206 (1)	सनातनसंस्कृतिबोधः –II	2	1	0	3
		BSSAVA-206 (2)	योगविज्ञानप्रयोगात्मकम्	0	0	6	
Total Credits							**22**
For those students who want to carry the course for Second year							**44**
Those students want to exit in 1st year they need to complete summer training of credit							**4**
Grand Total							**48**

*4 credit over and above of 44 credit to be awarded to those students who want to exit to the course after completing summer training

SEMESTER -3

S.No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit L	Credit T	Credit P	Total Credits
1	Discipline Specific Major-1	BSSAMJ-301	सौन्दरानन्दनकाव्यदीपिके (2-4)	5	1	0	6
2	Discipline Specific Major-2	BSSAMJ-302	ईशोपनिषन्निरुक्त-ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका:	4	1	0	5
3	Discipline Specific Minor	BSSAMN-303	कृत्यप्रत्ययसमासा:	3	1	0	4
4	Inter Disciplinary	BSSAID-304 (1)	स्वर्णकालेतिहास:	1	1	0	2
		BSSAID-304 (2)	समाजशास्त्रीयसिद्धान्तम्				
		BSSAID-304 (3)	वैशेषिकदर्शनम् (प्रथमाध्यायभाष्यसहितम्)				
5	Ability Enhancement	BSSAAE-305	सरलमानकसंस्कृतम्	2	0	0	2
6	Skill Enhancement/ Internship	BSSASE-306 (1)	सस्वरवेदपाठ:	1	0	4	3
		BSSASE-306 (2)	Advance Knowledge of Vocal & Instrumental				
		BSSASE-306 (3)	यज्ञविज्ञानम्				
						Total Credits	22

SEMESTER -4

S.No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit L	Credit T	Credit P	Total Credits
1	Discipline Specific Major-1	BSSAMJ-401	छान्दोग्योपनिषन्नीतिशतककाव्यदीपिका: (4-6)	4	1	0	5
2	Discipline Specific Major-2	BSSAMJ-402	योगदर्शनतर्कसंग्रहसांख्यदर्शनम्	4	1	0	5
3	Discipline Specific Major-3	BSSAMJ-403	सूक्तानि, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका च	5	1	0	6
4	Discipline Specific Minor-1	BSSAMN-404	स्त्रीप्रत्ययतद्धितप्रत्ययप्रकरणप्रौढरचनानुवादकौमुद्य:	3	1	0	4
5	Ability Enhancement	BSSAAE-405 (1)	Communication Technology	2	0	0	2
		BSSAAE-405 (2)	Introduction to Journalism & Mass Communication	1	1	0	
						Total Credits	**22**

SEMESTER -5

S.No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit L	T	P	Total Credits
1	Discipline Specific Major-1	BSSAMJ-501	अलङ्कारछन्दःकविपरिचयाः	4	1	0	5
2	Discipline Specific Major-2	BSSAMJ-502	नाट्यशास्त्रम्, (2,6,7), काव्यप्रकाशः (8)	3	1	0	4
3	Discipline Specific Major-3	BSSAMJ-503	न्यायदर्शनवैशेषिकदर्शनवेदान्तदर्शनवेदान्तसारचारवाकदर्शनजैनदर्शनबौद्धदर्शनानि	4	1	0	5
4	Discipline Specific Minor	BSSAMN-504	नामिकाख्यातिकौ	3	1	0	4
5	Internship	BSSASE-505	Yog Ayurved & Naturopathy	2	0	4	4
						Total Credits	**22**

SEMESTER -6

S.No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit L	T	P	Total Credits
1	Discipline Specific Major-1	BSSAMJ-601	उत्तररामचरितवाल्मीकिरामायणकिरातार्जुनीयम्	3	1	0	4
2	Discipline Specific Major-2	BSSAMJ-602	कौटिल्यार्थशास्त्रनैषधीयचरितशिशुपालवधम्	4	1	0	5
3	Discipline Specific Major-3	BSSAMJ-603	दूतवाक्योरुभङ्गमुद्राराक्षस (उत्तरार्द्धः) प्रतिमानाटकम्	4	1	0	5
4	Discipline Specific Minor-1	BSSAMN-604	नामिकाख्यातिकौ	3	1	0	4
5	Discipline Specific Minor-2	BSSAMN-605	Research Methodology & Project/ Dissertation	3	1	0	4
						Total Credits	**22**

विषय विशेषज्ञ

प्रो. ब्रजभूषण ओझा जी
विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग,
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली

विषय विशेषज्ञा

प्रो. शिवानी वी.
डीन-शास्त्रसंकाय कर्नाटक
संस्कृत

संकायाध्यक्षा

प्रो. साध्वी देवप्रिया
डीन-मानविकी एवं प्राच्य विद्यासंकाय,
पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

विभागाध्यक्ष

(प्रो. मनोहर लाल आर्य)
विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग,
पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

बी. ए. संस्कृतम् प्रथमसत्रम्

प्रथमपत्रम्- रघुवंशगीताप्रारम्भिकरचनानुवादकौमुद्यः

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

Code-BSSAMJ-101 Credit-6

उद्देश्य-

- महाकवि कालिदास विरचित रघुवंश के माध्यम से राजा दिलीप का वर्णन, वर्णव्यवस्था, ऋषि वशिष्ठ के पास गमन तथा नन्दिनी गौ की सेवा का ज्ञान कराना।
- गीता मे उल्लिखित, श्रद्धा, आहार, दान मोक्ष का संज्ञान प्राप्त कराना।
- बृहद् अनुवाद चन्द्रिका में पठित शब्दरूपों का स्मरण कराना, तथा लकारों का परिचय कराना।

परिणाम-

- महाकाव्य के अध्ययन से विभिन्न प्रकार के अलङ्कार, रीति, विद्याओं को सरलता से पहचान पाता है।
- गीता के अध्ययन से विद्यार्थी विभिन्न प्रकार के विभागत्रय यथा-श्रद्धात्रय, आहारत्रय आदि को जीवन में धारण करता हुआ इन विषयों में समाज में जागृति लाता है।
- विद्यार्थी सामान्यरूप से संस्कृत भाषा के सम्भाषण में समर्थ हो जाते हैं।
- नये शब्दरूपों व धातुरूपों के प्रयोग में शब्दकोष में वृधि होगी।
- गद्य काव्य के अध्ययन से गद्य रचना में पारंगत हो जाता है।

इकाई-1 पद्यकाव्यम्- महाकाव्य (रघुवंशम्- प्रथमसर्गतः (1-40)) **क्रेडिट-1**

राज्ञः दिलीपस्य वर्णनम्, राज्यस्य वर्णनम्, वर्णव्यवस्था, समृद्धिवर्णनं ।

(क) कविपरिचयः (ख) गद्यव्याख्या (ग) कथासारः / काव्यगतविशेषताः।

इकाई-2 पद्यकाव्यम्- महाकाव्यम् (रघुवंशम्- प्रथमसर्गस्य श्लोकसंख्या 41 तः प्रथमसर्गसमाप्तिपर्यन्तम्) ऋषिवशिष्टस्य समीपे गमनम् । नन्दिनीगोः सेवा । **क्रेडिट-1**

(क) कविपरिचयः (ख) गद्यव्याख्या (ग) कथासारः / काव्यगतविशेषताः

इकाई-3 गीता (अध्याय 16, अध्याय 17) **क्रेडिट-2**

दैवासुरसंपद्विभागयोगः। श्रद्धात्रयविभागः ।

आहारत्रयविभागः । दानत्रयविभागः इत्यादयः ।

(क) श्लोककण्ठस्थीकरणम् (ख) पदपदार्थज्ञापनम्

इकाई-4 प्रारम्भिक रचनानुवादकौमुदी (अभ्यास 1-15) **क्रेडिट-1**

संस्कृतभाषायामनुवादः

राम, हरि, गुरु, इत्यादीनि शब्दरूपाणि । लकाराणां परिचयः ।

इकाई-5 प्रारम्भिक रचनानुवादकौमुदी (अभ्यास 16-30) **क्रेडिट-1**

संस्कृतभाषायामनुवादः

सर्वनामशब्दरूपाणि, करिन्, राजन् इत्यादीनि च । अस् भू कृ धातुः पञ्चलकार ।

संस्कृतभाषायामनुवादः

मति, नदी, धेनु इत्यादीनि शब्दरूपाणि । दा, श्रु, कि इत्यादीनि धातुरूपाणि ।

क्तक्तवतू, शतृ इत्यादयः प्रत्ययाः ।

पाठ्यपुस्तकम्

1. **रघुवंशम्**- महाकविकालिदासविरचितम्

प्रकाशकः- चौखम्भा ओरियन्टालिया, देहली ।

2. **श्रीमद्भगवद्गीतामृतम्**

प्रकाशकः- दिव्यप्रकाशनम्, दिव्ययोगमन्दिर ट्रस्ट पतंजलि योगपीठ।

3. **प्रारम्भिक रचनानुवादकौमुदी**- डॉ. कपिलदेव द्विवेदी

प्रकाशकः- विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी ।

सहायकग्रन्थाः-

बृहद् अनुवाद चन्द्रिका- चक्रधर नौटियाल 'हंस' शास्त्री

प्रकाशकः-मोतीलाल बनारसीदास ।

द्वितीयपत्रम्-वर्णोच्चारणशिक्षासन्धिकारकप्रकरणम्
Code-BSSAMN-102 Credit-4

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य-

- सन्धियों का ज्ञान कराना, एवं कारक प्रकरण का विस्तृत ज्ञान कराना।
- स्वामी दयानन्द द्वारा संगृहीत, पाणिनीय, वर्णोच्चारण शिक्षा द्वारा प्रत्येक वर्ण का उच्चारण स्थान, व प्रयत्न का बोध कराना।
- पाणिनीय अष्टाध्यायी में वर्णित पारिभाषिक संज्ञाओं का बोध कराना।

परिणाम-

- संधि एवं कारक के ज्ञान से, संस्कृत भाषा बोलने व लिखने में दक्षता प्राप्त होगी।
- उपर्युक्त व्याकरणविषयक ज्ञान से अन्य शास्त्रों के प्रवेश में सहयोग प्राप्त हागा।

इकाई-1 वर्णोच्चारणशिक्षा - अक्षर वर्ण परिभाषा स्वर लक्षण व्यंजन लक्षण इत्यादि । **क्रेडिट-1**
संज्ञासूत्राणि (गुणः, वृद्धिः, प्रातिपदिकम्, नदी, घि, उपधा, टि, सर्वनामस्थानम्)

इकाई-2 अच् सन्धिः - इको यणचि, एचोऽयवायावः, आदगुणः वृद्धिरेचि इत्यादयः । **क्रेडिट-1**
हल् सन्धिः - स्तोः श्चुना श्चुः, ष्टुना ष्टुः,

इकाई-3 विसर्ग सन्धिः - ससजुषो रुः, विसर्जनीयस्य सः, वा शरि इत्यादयः। **क्रेडिट-1**
हल् सन्धिः - झलां जशोऽन्ते, तोर्लि इत्यादयः।

इकाई-4 कारकप्रकरणम् **क्रेडिट-1**
ध्रुवमपायेऽपादानम्, कर्मणायमभिप्रैति स सम्प्रदानम्, साधकतमं करणम् ,
आधारोऽधिकरणम् इत्यादयः।

पाठ्यपुस्तकम्-

1. **व्याकरण चन्द्रोदय-1** डॉ साध्वी देवप्रिया
   प्रकाशकः- दिव्य प्रकाशन पतंजलि योगपीठ हरिद्वार
2. **वर्णोच्चारण-शिक्षा-** श्रीमत्स्वामिदयानन्दसरस्वती
   प्रकाशकः-रामलाल कपूर ट्रस्ट।
3. **लघु सिद्धान्तकौमुदी- वरदराजाचार्यप्रणीता**
   प्रकाशकः-चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
4. **बृहद् अनुवाद चन्द्रिका-** चक्रधर नौटियाल 'हंस' शास्त्री
   प्रकाशकः-मोतीलाल बनारसीदास

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

तृतीयपत्रम्-प्राचीनभारतेतिहासः (आदितः प्रभृति मौर्यकालपर्यन्तम्)

BSSAID-103 (1), Credit – 4

Course Objective

This course introduces to the students a gradual evolution of early civilization in Indian and polity from the age of Mahajanapadas to the age of foreign incursions during the Pre-Gupta period. Beginning with a general description of the political condition in the sixth century B.C., emergence of our early culture like Palaeolithic, Mesolithic, Neolithic, chalkolithic, Harappa and Vedic culture are described in the first two unit and political development of rising Magadha empire described in the third unit and Alexandra's invasion of Indian and the origin, development and decline of Mauryan empire are dealt with in last unit

Course Outcome: Students will able to:
1. Understand the status of the society and culture of ancient India during the Palaeolithic, Mesolithic, Neolithic, Harappa, and Bronze ages.
2. Identify Approaches towards the sources and the study of ancient Indian history.
3. Understand about India's Vedic and post-Vedic periods, as well as the rise of Jainism and Buddhism as religions and cultures in ancient India.
4. They will exchange ideas about how to separate the Magadha Empire from the other sixteen Janapadas.
5. Understand Great king Asoka's Dhamma and his inscriptions

इकाई प्रथम-भारतीय इतिहास को जानने के स्रोत, स्रोतों का महत्व, स्रोतों के प्रकार- साहित्यिक स्रोत, पुरातात्विक स्रोत और विदेशी यात्रियों का विवरण, प्रागैतिहासिक काल का परिचय- पुरापाषाण कालः सोहन संस्कृति एवं मद्रासियन संस्कृति, मध्यपाषाणकाल एवं नवपाषाण कालः कृषि का विकास, आग की खोज, पहिये का अविष्कार, प्रागैतिहासिक काल में औजारों का निर्माण और उनके स्वरूप- पुरापाषाण काल, मध्यपाषाण काल, नवपाषाण काल। प्राग् सैन्धाव एवं ताम्र पाषाण काल का परिचय।

इकाई द्वितीय-सैन्धाव सभ्यताः उत्पत्ति और विकास, प्रथम नगरीकरण, सैन्धाव सभ्यता की आर्थिक, सामाजिक, धाार्मिक और सांस्कृतिक परिदृश्य, कला का विकास, सांस्कृतिक स्थल के परिवर्तन के कारण, गंगेटिक संस्कृतिः वैदिक काल- वैदिक साहित्य की प्रकृति, ऋग्वैदिक कालीन राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति, उत्तरवैदिक कालीन राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति ।

इकाई तृतीय-सैन्धाव सभ्यता में धार्मिक परम्पराओं की उत्पत्ति और धर्म के विविधआयाम, वैदिक काल में धर्म का स्वरूप, प्रकृति पूजा, इन्द्र का बढ़ता महत्व, अग्नि, वरूण,ऋतऔर मातृ देवी की पूजा का विकास, उत्तर वैदिक काल में धाार्मिक प्रथाओं का विकासः धाार्मिक अनुष्ठान, यज्ञ की प्रधाानता।

इकाई चतुर्थ-उपनिषदीय धर्मः आत्मा और सर्वोच्च ब्रह्म की अवधारणा। जैन धर्मः महावीर का प्रारम्भिक जीवन और उनकी शिक्षाएं, बौद्ध धर्मः गौतम बुद्ध का प्रारम्भिक जीवन और उनकी शिक्षाएं ।

इकाई पंचम-छठी शताब्दी ई.पू. भारत की राजनीतिक स्थिति (महाजनपद और गणराज्य), मगध साम्राज्य का उदयः हर्यक वंशः बिम्बिसार और अजातशत्रु, शिशुनाग वंश, नंद वंश, महापद्मनंद और घनानंद, सिकंदर का यूनानी आक्रमण, मौर्य वंशः चंद्रगुप्त मौर्यः प्रारम्भिक जीवन और उनका साम्राज्य विस्तार, बिन्दुसार, अशोकः साम्राज्य विस्तार, उनके अभिलेख, धम्म, मौर्य वंश का पतन।

पाठ्य पुस्तक-भार्मा एल. पी. प्राचीन भारत, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, 2022, सिंह उपेन्द्रः प्राचीन और पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास पाशाण काल से 12 वीं शताब्दी ई. तक, दिल्ली 2016 ।

Recommended Readings:

Majumdar, R.C.: Prachin Bharat, Motilal Banarasidas Delhi, 1962.
Raychoudhury, H. C., Political History of Ancient India, Calcutta, 1931.
Goyal, S. R., Magadh, Satawahan, Kushan Samrajyon ka Yug (Hindi), Jaipur
Sharma, R. S., Prarambhik Bharat ka Parichay, (Hindi) New Delhi 2017.
Srivastava, K. C., Prachin Bharat ka Itihas Tatha Sanskriti, Allahabad, 2019
Shastri, K. A. N., The Age of Nandas and Mauryas, Varanasi, 1967.
Majumdar, R.C. and A. D. Pusalker (eds.), The History and Culture of the Indian People, Vols. I –V (relevant chapters), Bombay, 1951-1957.
Jha D. N., Ancient India: In Historical Outline, 1997
Jha D. N., Early India: A Concise History, 2004.

अथवा

तृतीयपत्रम्- समाजशास्त्रपरिचयः

Code- BSSAID-103 (2) Credit - 4

उद्देश्य-

- समाजशास्त्र का बोध कराना।
- सामाजिक अवधारणाओं से अवगत कराना।
- सामाजिक संरचना से परिचित कराना।
- सामाजिक स्तरीकरण एवं गतिशीलता का ज्ञान कराना।
- संस्कृति एवं सभ्यता का विश्लेषणात्मक बोध कराना।

परिणाम-

- समाजशास्त्र के बोध से समाज में व्याप्त अच्छाईयों व बुराईयों की जानकारी से बुराईयों को छोड़कर अच्छाइयों में जीने के लिए प्रवृत्त हो जाता है।
- समाजिक अवधारणाओं के अध्ययन से पारिवारिक व सामाजिक एकता व सामंजस्य पूर्वक व्यवहार करने में कुशल हो जाता है।
- संस्कृति व सभ्यता के विश्लेषण से संस्कृति व सभ्यता में पूर्ण निष्ठा व विश्वास रखते हुए उसकी रक्षा करने में तत्पर हो जाता है।

इकाई प्रथम-समाजशषास्त्र का अर्थ, परिभाषा, क्षेत्र एवं महत्व, समाजशषास्त्र की प्रकृति, सामाजिक विज्ञान के रूप में समाजश षास्त्र, समाजश षास्त्र का अन्य सामाजिक विज्ञान से सम्बन्ध, भारत में समाजश षास्त्र का इतिहास।

इकाई द्वितीय-समाज की मौलिक अवधारणाएॅं, समुदाय, समिति एवं संस्थाओं का अर्थ एवं अवधारणा, सामाजिक समूह, मानव एवं पषु समाज, सामाजिक संस्थाएंः परिवार, नातेदारी, विवाह, धर्म, षिक्षा एवं राज्य।

इकाई तृतीय-संस्कृति एवं सभ्यता, सांस्कृतिक बहुलतावाद, बहुसंस्कृतिवाद एवं सांस्कृतिक सापेक्षवाद, संस्कृति की प्रमुख विषेषताः आत्मसातीकरण, पर–संस्कृतिग्रहण एवं एकीकरण, सामाजिक सांस्कृतिक प्रक्रियाएंः प्रतिस्पर्धा एवं संघर्ष।

इकाई चतुर्थ-सामाजिक संरचना, प्रस्थिति तथा भूमिका, सामाजिक प्रतिमान, जनरीतियां, लोकाचार, मूल्य, लोकाचार।

इकाई पंचम-सामाजिक स्तरीकरणः अर्थ, रूप एवं आधारभूत तत्व, सामाजिक गतिषीलताः अर्थ, रूप एवं आधारभूत तत्व।

पाठ्यपुस्तकम्-गुप्ता, एम. एल. एवं शर्मा, डी. डी., भारत में समाज, साहित्य भवन पब्लिकेषन्स, आगरा, 2022

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः

1. Haralambos, M.- (1998) Sociology : Themes and Perspectives , OUP, New Delhi
2. Jayaram , N. – (1998) Introductory Sociology , Macmillan India
3. Mukherjee , R. – (1998) Systematic Sociology , Sage Omen
4. T.K. & Venugopal , C.N. – (1993) Sociology , Estern Book Co.
5. Dube , S.C. – (1992) Understanding change : Anthropological Sociological Perspectives, Vikash Publication House, New Delhi.
6. Smelser, N.J. – (1993) Sociology, Prentice Hall of India Pvt. Ltd. New Delhi
7. Giddens Anthony – (2009) Sociology, Polity Press,London Beteille, Andre – (2002) Sociology Essays on Approach and methods, OUP , New Delhi Gupta
8. Dipankar (Ed.)- Social Stratification, OUP Page 9 of 50 Davis, K.-(1996) Human Society, \
9. Macmillan Goode William, J. – (1998) The Family, Prentice Hall, New Delhi Johnson, Harry A, Sociology , Allied Publishers,

अथवा

तृतीयपत्रम्-भारतीयसंविधानम्

Code- BSSAID-103 (3) Credit-4

उद्देश्य-

- संविधान सभा और संविधान सभा का बोध कराना।
- सरकार के अंगों का ज्ञान कराना।
- संघवाद की अवधारणा से परिचित कराना।
- विकेन्द्रीकरण से अवगत कराना।
- प्रयोगात्मक वक्तव्य का बोध कराना।

परिणाम-

- संविधान के अध्ययन से छात्र के अपने अधिकार व कर्तव्य के बोधपूर्वक समाज व राष्ट्र के विधि व निषेध को जानकर विधि का अनुपालन व निषेध का त्याग करने में समर्थ हो जाता है।
- संघवाद के अध्ययन से केन्द्र व राज्य सरकार की शक्तियों का समुचित उपयोग करता हुआ राष्ट्र के उत्थान व उत्कर्ष में सहयोग प्रदान करता है।
- सरकार के अंगों के अध्ययन से विधायिका, कार्यपालिका व न्यायपालिका की विधियों के अनुकूल व्यवहार करने में समर्थ हो जाता है।

Introduction: This course acquaints students with the Constitutional design of state structures and institutions, and their actual working over time. The Indian Constitution accommodates conflicting impulses (of liberty and justice, territorial decentralization and a strong union, for instance) within itself. The course traces the embodiment of some of these conflicts in constitutional provisions, and shows how these have played out in political practice. It further encourages a study of state institutions in their mutual interaction, and in interaction with the larger extra-constitutional environment.

UNIT-I: The Constituent Assembly and the Constitution
- Formation and working of the Constituent Assembly
- The Philosophy of the constitution: The Preamble and its Features.
- Fundamental Rights, Directive Principles of State Policy, Fundamental Duties

UNIT-II: Organs of Government
- The Legislature and the Executive
- The Judiciary: Supreme Court and High Courts

UNIT-III: Federalism
- Federalism: Centre-State relations
- Recent trends in federalism

UNIT-IV: Decentralization
- Panchayati Raj Institutions: Composition, Powers and functions of Gram Panchayat, Panchayat Samiti and Zilla Parishad
- Municipalities: Composition Powers and function of Municipal Corporation, Municipal Council and Notified Area Council

Text Books:

1. G. Austin, (2010) 'The Indian Constitution: Cornerstone of a Nation', New Delhi, Oxford University Press, 15th print.
2. R. Bhargava (ed.) 'Politics and Ethics of the Indian Constitution', New Delhi, Oxford University Press.
3. D. Basu, (2012) 'Introduction to the Constitution of India', New Delhi, Lexis Nexis.

Reference Books:

1. Mehra and G. Kueck (eds.) 'The Indian Parliament: A Comparative Perspective', New Delhi, Konark.
2. B. Kirpal et.al (eds.) 'Supreme but not Infallible: Essays in Honour of the Supreme Court of India', New Delhi, Oxford University Press.
3. L. Rudolph and S. Rudolph, (2008) 'Explaining Indian Institutions: A Fifty Year Perspective, 1956-2006', Volume 2, New Delhi, Oxford University Press.
4. M. Singh, and R. Saxena (2011) (eds.), 'Indian Politics: Constitutional Foundations and Institutional Functioning', Delhi: PHI Learning Private Ltd.
5. K. Roy, C. Saunders and J. Kincaid (2006) (eds.) 'A Global Dialogue on Federalism', Volume 3Montreal, Queen's University .

प्रथमसत्रम्

पूर्णाङ्काः–100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः–75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः–25
समयः–होरात्रयम्

चतुर्थपत्रम्-Communicative English-1

BSSAAE-104 Credit-2

Programme Objectives

- Develop the students' abilities in grammar, oral skills, reading, writing and study skills
- Students will heighten their awareness of correct usage of English grammar in writing and speaking
- Students will improve their speaking ability in English both in terms of fluency and comprehensibility
- Students will give oral presentations and receive feedback on their performance
- Students will increase their reading speed and comprehension of academic articles
- Students will improve th eir reading fluency skills through extensive reading
- Students will enlarge their vocabulary by keeping a vocabulary journal
- Students will strengthen their ability to write academic papers, essays and summaries using the process approach.

Course Specific Outcomes

- Produce words with right pronunciation
- Develop vocabulary and improve the accuracy in grammar
- Develop the confidence to speak in public
- Demonstrate positive group communication exchanges.
- Ability to speak and write clearly in standard, academic English

MethodofTeaching&Assessment-Videos,Audioclippings,discussion,writtenandoralexercises

Unit-1:-Syllables(stressinsimplewords),Rhythm,Intonation,&Revision ofBasic Grammar

- Tenses
- Prepositions
- Articles
- Conjunctions
- Modals
- Directand indirectSpeech

Unit-2: Reading &Writing

- Vocabulary-Homophones,Homonyms
- AnalyticalSkills
- EditingSkills-ErrorCorrection
- ArticleWriting
- ReadingComprehension

Unit-3: Listening–

- Audio books
- Podcasts
- Speechesofvariousrenowned YogaMasters
- TedTalks

Unit-4:-SpokenEnglish

- Accentsanddialects
- Extempore
- OralReport,
- Debatesand GDs
- PublicSpeaking Skills
- Leadership
- TeamWork

Unit-5: प्रयोगात्मक वक्तव्य

Text books:*EnglishGrammarin Use,4th Edition,Cambridgeby RaymondMurphy* , SuggestedSources:Britishouncil.org

Text books:

- English Grammar in Use, 4th Edition, Cambridge by Raymond Murphy
- Oxford Handbook for the Foundation Programme by Tim Raine & James Dawson& Stephan Sanders & Simon Eccles – eBook

Suggested Sources:

- learnenglish.britishcouncil.org
- learnenglish.britishcouncil.org/general-english/magazine-zone
- British Council e-Books for free - pdfdrive.com/british-council-books.html
- Check Your Vocabulary for English for the IELTS Examination - eBook

प्रथमसत्रम्

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

पञ्चमपत्रम्- योगचिकित्सा -१
Code- BSSASE-105 (1) Credit-3

उद्देश्य :

- भारतीय चिकित्सा पद्धति के समन्वित् स्वरूप का बोध कराना ।
- समन्वित चिकित्सा पद्धति के व्यावहारिक एवं प्रयोगात्मक अभ्यास द्वारा साध्य एवं असाध्य रोगो का निदान।
- योग, आयुर्वेद, पञ्चकर्म, षट्कर्म, नेचुरोपैथी, आहार चिकित्सा, यज्ञचिकित्सा, एक्यूपंचर, एक्यूप्रेशर एवं फिजियो थैरेपी जैसे समन्वित् भारतीय पुरातन चिकित्सा पद्धतियों के सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक बोध द्वारा योग्य एवं प्रशिक्षित व्यक्तित्व का निर्माण करना।

परिणाम :

- समन्वित चिकित्सा पद्धति में प्रशिक्षित विद्यार्थी समाज में साध्य-असाध्य रोगों से पीडित रोगियों को उपचार देकर उन्हें सम्पूर्ण आरोग्य का लाभ प्रदान करता है एवं भारतीय पुरातन चिकित्सा व्यवस्था के प्रचार प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है ।
- सेवा निष्ठ आजीविका का आलम्बन लेकर स्वयं आत्मनिर्भर होता हुआ अन्यों को भी रोजगार परक सेवा क्षेत्र में नियोजित करता है, उपकार परख उपचार की एक स्वस्थ परम्परा का संवाहक बनकर समाज को शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य के मार्ग पर अग्रसर करता है ।

इकाई 1- योग एवं स्वास्थय	(10 घण्टे)
इकाई 2- आयुर्वेद एवं स्वास्थ्य	(10 घण्टे)
इकाई 3- आहार चिकित्सा	(10 घण्टे)
इकाई 4- व्याधियों के अनुसार पथ्यापथ्य	(10 घण्टे)
इकाई 5- प्राथमिक चिकित्सालय अथवा रसोई घर	(10 घण्टे)

पाठ्यपुस्तकम्-

उपचार पद्धति, प्रकाशन- द्विव्य प्रकाशन, द्विव्य योग मन्दिर ट्रस्ट, हरिद्वार।

अथवा

पञ्चमपत्रम्- Basics Knowledge of Vocal & Instrumental

Code- BSSASE-105 (2) Credit-3

Objective-

1. Understand the fundamental concepts of music, including its origins, methods, types, and forms
2. Explore the nature of sound, its origin, and the elements of music such as notes, pitches, and rhythm. Learn about concepts like Shruti, Swar, Andolan, Laya, and Taal, including their types and characteristics. Gain knowledge of basic musical notes, scales, and octaves.Practice to Sing five Bhajans.
3. Understand the concept of Raag, its rules, classifications, and basic characteristics. Identify the ten Thaats and learn about their significance in Raag classification. Recognize three Raags belonging to each of the ten Thaats.
4. Study the lives and contributions of prominent musicians.

UNIT- I Basic Knowledge & Definition of Music, Its Origin, Its Methods, Brief about Uttar bhartiya & Carnatic Music , Margi /Desi Sangeet.

UNIT- II Sound, Origin of Sound, Nada, Types of Nada (Aahat/Anahat), Shruti, Swar, Types of Swar, Andolan, Knowledge of 7 Basic Notes & 5 vikrit Notes, Saptak,Types of Saptak.

Bhatkhande Swarlipi padhhati, **Definitions**: Alankar, Matra, Sama, Laya, sthai, Antra, **Kulgeet of UOP**,

5 Alankars (According to Bhatkhande kramik Pustak Malika-1),

Relation between Music & Yog, Basic Knowledge of Music Therapy & Its Benefits. Basic Music Related Five shlokas from the Book Raag & Taal Parichay Bhaag –All Parts, Basic Introduction of **"TeenTal",** Labeled Diagram of Harmonium, Labeled Diagram of Tabla, An Elementry introduction of types of instruments- Tatta , Sushir, Avanaddha, Ghana.

UNIT- III Practice of "AUM" in Kharaj, Breathing Exercise to improve Voice Range and Vocal exercise of 5 Alankars (According to Bhatkhande kramik Pustak Malika-1), Practice of Twelve Swars in Saptak,Practice of Two Bhajan,One Patriotic Song,Kulgeet, Five Swastivachan Mantra, Practice of Musical Meditation in Primary stage for Concentration.

UNIT- Iv <u>Harmonium</u>:- Playing Skills of Yagya Prarthna, One Bhajan.

<u>Tabla</u>:- Elementry Practice of Some Tabla Bols(Na Ti Teen, Dha Dhi Dheen), Musical Chart Paper/Model.

Outcomes:-

1. Students will know what music is, where it comes from, and the different types it can have.
2. Students will understand how sound works and learn about notes, pitches, and how they change in music.They will learn about concepts like Shruti, Swar, Andolan, Laya, and Taal, including their types and characteristics.Students will acquire knowledge of basic musical notes, scales, and octaves, and practice singing five Bhajans.
3. Students will learn about Raag, its rules, and different types, helping them appreciate Indian classical music better.
4. Students will discover the lives of famous musician and understand their importance in music history.

or

पञ्चमपत्रम्- Sanskrit with Technology

Code- BSSASE-105 (3) Credit-3

Objectives:

- Introduce students to the basic concepts of computers and the fundamental tasks of the computers.
- Provide students with knowledge of computer networks, the internet, and how to use web browsers and electronic mail effectively for academic and personal purposes.
- Enable students to use word processing, spreadsheet, and presentation software effectively.
- Introduce students to online tools for Sanskrit learning and practice, including typing, transliteration, and other Sanskrit-specific applications.

Unit 1 Computer Fundamentals (8 hours)

What is Computer, Basic Applications of Computer; Components of Computer System, Computer Memory, Concepts of Hardware and Software; What is an Operating System; Basics of Popular Operating Systems; The User Interface, Folders and Directories, Creating and Renaming of files and folders, Opening and closing of different Windows.

Unit 2 Introduction to Internet, WWW and Web Browsers (7 hours)

Basic of Computer networks; LAN, WAN; Concept of Internet; Applications of Internet; connecting to internet; World Wide Web; Web Browsing software, Basics of electronic mail

Unit 3 Understanding Word Processing/MS Office (12 hours)

Word Processing Basics; Opening and Closing of documents; Formatting of text; Table handling; Spell check,

Using Spread Sheet: Basics of Spreadsheet; Manipulation of cells; Formulas and Functions; Editing of Spread Sheet,

Making Small Presentation: Basics of presentation software; Creating Presentation; separation and Presentation of Slides; Slide Show; Taking printouts of presentation / handouts.

Unit 4 Online Sanskrit Tools (6 hours)

Samsâdhanî, Sambhâcâ, Sanskrit Heritage, Tools by IIT Kharagpur

Unit 5 Practical Sanskrit (12 hours)

Sanskrit Typing and Transliteration (Roman Diacritics)

Outcomes:

- After successfully completing the course, Students will be able to
- 1. Identify the components of a computer system and effectively manage files and folders within an operating system.
- 2. Demonstrate the ability to connect to the internet, browse the World Wide Web using web browsers, and use email systems efficiently for communication and information gathering.
- 3. Create and format the documents in Word, work with spreadsheets in Excel, and prepare presentations using PowerPoint, including the use of basic functions and formulas.
- 4. Develop proficiency in typing Sanskrit, using Roman Diacritics for transliteration, and applying online Sanskrit tools for enhanced language learning and practice.

References:

· Fundamentals of Computers by Rajaraman V

· Computer Fundamentals by P K Sinha

षष्ठपत्रम्- सनातनसंस्कृतिबोधः -I

Code- BSSAVA-106 (1) Credit-3

उद्देश्य

- ऋग्वेद एवं यजुर्वेद के चयनित सूक्त एवं मन्त्रों से अवगत कराना।
- वैदिक षड्दर्शनों का सामान्य परिचयात्मक ज्ञान कराना।
- गीता एवं उपनिषद् के प्रसिद्ध प्रसंगों का बोध कराना।
- भारतीय नीति गन्थों एवं षोडश संस्कारों से अवगत कराना।

परिणाम

- वेद के कतिपय प्रसिद्ध सूक्त एवं मन्त्रों का शुद्धतापूर्वक वाचन एवं व्याख्यान करने में विद्यार्थी समर्थ हो जाता है।
- वैदिक षड्दर्शनों के सिद्धान्तों के तुलनात्मक विश्लेषण में दक्ष हो जाता है।
- गीता एवं उपनिषद् के उपर्युक्त चयनित प्रसंगों का अधिगम होगा।
- नीति-शास्त्रों एवं षोडश संस्कारों का विशद् ज्ञान अर्जित होगा।

इकाई १- ऋग्वेद एवं यजुर्वेद के चयनित मंत्र

इकाई २ - योग, सांख्य, वैशेषिक, न्याय, वेदान्त, मीमांसा दर्शनों का सामान्य परिचय

इकाई ३ - श्रीमद्भगवद्गीता एवं उपनिषद् (ईश, केन, कठ, मुण्डक, माण्डुक्य, प्रश्न) के चयनित प्रसंग

इकाई ४ - नीति गन्थों का परिचय (चाणक्यनीति, विदुरनीति, भर्तृहरि)

इकाई 5 - सोलह संस्कारों का विस्तृत वर्णन

निर्धारित ग्रन्थ-

- सनातन संस्कृति बोध, प्रो0 साध्वी देवप्रिया, दिव्यप्रकाशन

अथवा

षष्ठपत्रम्- पर्यावरणविज्ञानम्

Code- BSSAVA-106 (2) Credit-3

THE OBJECTIVES OF ENVIRONMENTAL SCIENCE ARE:

(a) Creating the awareness about Environmental Problems among the students.
(b) Imparting basic knowledge about the Environment and its allied problems and solutions.
(c) Developing an attitude of concern for the environment.
(d) Motivating public to participate in environment protection and environment improvement.
(e) Acquiring skills to help the concerned individuals in identifying and solving environmental problems.
(f) Striving to attain harmony with Nature.

COURSE SPECIFIC OUTCOMES

The course will empower the undergraduate students by helping them to:

- Gain in-depth knowledge on natural processes and resources that sustain life and govern economy.
- Understand the consequences of human actions on the web of life, global economy, and quality of human life.
- Develop critical thinking for shaping strategies (scientific, social, economic, administrative, and legal) for environmental protection, conservation of biodiversity, environmental equity, and sustainable development.
- Acquire values and attitudes towards understanding complex environmental economic- social challenges, and active participation in solving current environmental problems and preventing the future ones.
- Adopt sustainability as a practice in life, society, and industry.

Unit 1: Multidisciplinary nature of Environmental Science and Classification of Natural Resources (6 lectures)

Definition, scope and importance, Need for public awareness
Renewable and non-renewable resources:
Natural resources and associated problems
a) Forest resources: Use and over-exploitation, deforestation, case studies. Timber extraction, mining, dams and their effects on forest and tribal people
b) Water resources: Use and over-utilization of surface and ground water, floods, drought, conflicts over water, dams-benefits and problems
c) Mineral resources: Use and exploitation, environmental effects of extracting and using mineral resources, case studies
e) Energy resources: Growing energy needs, renewable and non-renewable energy sources, use of alternate energy sources. Case studies
f) Land resources: Land as a resource, land degradation, man induced landslides, soil erosion and desertification

- Role of an individual in conservation of natural resources
- Equitable use of resources for sustainable lifestyles

Unit 2: Ecosystemsand Functions: (8 lectures)

- Biosphere and its formation
- Concept of an ecosystem
- Structure and function of an ecosystem

• Producers, consumers and decomposers
• Energy flow in the ecosystem
• Ecological succession
• Food chains, food webs and ecological pyramids
• Introduction, types, characteristic features, structure and function of the following ecosystem :-
Forest ecosystem, Grassland ecosystem, Desert ecosystem, Aquatic ecosystems (ponds, streams, lakes, rivers, oceans, estuaries)

Unit 3: Biodiversity and Conservation (8 Lectures)
• Introduction – Definition: genetic, species and ecosystem diversity.
• Value of biodiversity: consumptive use, productive use, social, ethical, aesthetic and option values
• Biodiversity threats
• Hot-sports of biodiversity
• Threats to biodiversity: habitat loss, poaching of wildlife, man-wildlife conflicts.
• Endangered and endemic species of India
• Conservation of biodiversity: In-situ and Ex-situ conservation of biodiversity.

Unit 4: Environmental Pollution (6 lectures)
Definition
• Cause, effects and control measures of:-
a. Air pollution
b. Water pollution
c. Soil pollution
e. Noise pollution
g. Nuclear hazards
• Solid waste Management: Causes, effects and control measures of urban and Industrial wastes
• Role of an individual in prevention of pollution
• Disastermanagement: floods, earthquake, cyclone and landslides,
- Water conservation, rain water harvesting, watershed management
- Climate change, global warming, acid rain, ozone layer depletion. Case Studies.
- Environmental Acts and Policies (water, wildlife, biodiversity, air etc.)

Field Visits to Protected Areas, Visit to Research Organisation and Industries including Bird Watching Program/Biodiversity Observations
Recommended Books:

- Essential Environmental Studies by S P Misra & S. N Pandey (Anr Books Pvt. Ltd.)
- Environmental Studies by J P Sharma, Laxmi Publications,
- Paryavaran Addhayan (Hindi version) by Anubha Kaushik & C P Kaushik, New Age Publications
- Ecology & Environmental Biology by Ramdeo Misra, English Book Depot
- Environment and Ecology by R.Rajagopalan, OAK BRIDGE
- Ecology by Dr. Kailash Chaudhary & Dr. Ram Prakash Saran, IFAS Publications
- Fundamentals of Ecology by Eugene Pleasants Odum, CENGAGE Learning

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

बी. ए. संस्कृतम् द्वितीयसत्रम्

प्रथमपत्रम्- शुकनासोपदेशशिवराजविजयाभिज्ञानशाकुन्तलम्

Code - BSSAMJ-201 Credit-6

उद्देश्य

- सौनदरानन्दन महाकाव्य के माध्यम से वैराग्य के उपाय लाभ एवं तत्वज्ञान विषयक समझ प्रदान करना।
- काव्य के लक्षण, प्रयोजन, शक्ति, रस इत्यादि का ज्ञान प्रदान करना।

परिणाम

- अभ्युदय युक्त जीवन में भी वैराग्य एवं सन्तोष के साथ समाज सेवा में संल्गन रहता है।
- काव्य ग्रन्थों के बोध में निपुणता प्राप्त करता है।

इकाई-1 सौन्दरानन्दनम् त्रयोदशः सर्गः - शीलमिन्द्रियसंयमं च (1-56 श्लोकाः)

वैराग्ये बाधाः, तेषाम् उपायः, तत्त्वदर्शनस्य लाभाः, तत्त्वदर्शनस्य अप्राप्तौहानि

(क) पदार्थः, अन्वयार्थः/छन्दः, अलङ्कारः, रसः, व्यङ्ग्यार्थः (ख) व्याकरणात्मकप्रश्नः

इकाई-2 सौन्दरानन्दनम् चतुर्दशः सर्गः आदि प्रस्थान (1-52 श्लोकाः)

वैराग्ये बाधाः, तेषाम् उपायः, तत्त्वदर्शनस्य लाभाः, तत्त्वदर्शनस्य अप्राप्तौहानि

(क) पदार्थः, अन्वयार्थः/छन्दः, अलङ्कारः, रसः, व्यङ्ग्यार्थः (ख) व्याकरणात्मकप्रश्नः

इकाई-3 काव्यदीपिका

प्रथम शिखा- मङ्गलाचरणम्, काव्यप्रयोजनम्, काव्यलक्षणम् ।

द्वितीय शिखा-शक्तित्रय

इकाई-4 काव्यदीपिका

तृतीय शिखा- नवरस

इकाई-5 काव्यदीपिका

चतुर्थ शिखा-नाटक लक्षण, अंक पूर्वरङ्ग, नान्दी, प्रस्तावना-भेदसहित

पाठ्यपुस्तकम् -

1. **सौन्दरानन्दनम्**- चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।
2. **काव्यदीपिका**- विद्यारत्नकान्तिचन्द्रभट्टाचार्येण संगृहीता ।

प्रकाशकः- चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।

द्वितीयपत्रम् - शब्दरूपधातुरूपलिङ्गानुशासनम्

Code - BSSAMN-202 Credit-4

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य-

- श्रीमद्वरदराजाचार्यप्रणीत लघुसिद्धान्तकौमुदी के द्वारा अजन्त तथा हलन्त शब्दरूपों की सिद्धि का बोध कराना।
- डॉ. कपिलदेव द्विवेदीद्वारा प्रणीत प्रौढ रचनानुवादकौमुदीसे शब्द तथा धातुरूपों का स्मरण कराना।
- पं. सूर्यदर्शनदेवाचार्यप्रणीत लिङ्गानुशासनम् के माध्यम से शब्दों के लिङ्गों का ज्ञान प्रदान कराना।

परिणाम-

- राम आदि विभिन्न शब्दरूप के स्मरण से, संस्कृत सम्भाषण में सरलता ओर सुगम्यता होती है।
- धातुरूप के अध्ययन से धातु प्रयोग एवं भिन्न-भिन्न काल में विभिन्न लकारों के प्रयोग द्वारा दक्षता प्राप्त होती है व संस्कृत शब्दकोष की आभीवृद्धि होती है।
- लिङ्गानुशासन अध्ययन से विद्यार्थी विभिन्न शब्दों को, स्त्री, पु., नपु. लिङ्ग जानकर सरलता से प्रयोग करने में सक्षम होता है।

इकाई-1 सुबन्तप्रकरणम्-अजन्त पुलिङ्ग, स्त्री नपुं. (रूपसिद्धिः)

राम, सर्व, हरि, गुरु, पति, सखि, पितृ, कर्तृ, नौ, गो

लता, मति, धेनु, स्त्री, नदी, ज्ञानम्, मधु

इकाई-2 हलन्त्

राजन्, मघवन्, पथिन्, विद्वस्, अस्मद्, युस्मद्, चतुर् (त्रिषुलिङ्गेषु),

इदम् (लिङ्गत्रये), अदस् (लिङ्गत्रये), किम् (लिङ्गत्रये)

इकाई-3 शब्द रूप स्मरण

पाद, गोपा, भूपति, सुधी, गुरु, स्वभू, नृ, प्राञ्च्, वणिज्, भूभृत्, भगवत्, धीमत्, महत्, लता, मति, स्त्री, नदी, ज्ञानम्, वारि, मधु, राजन्, मघवन्, पथिन्, विद्वस्, अस्मद्, युस्मद् लिह्, चतुर् (त्रिषु लिङ्गेषु), इदम् (लिङ्गत्रये) किम् (लिङ्गत्रये) ।

इकाई-4 धातु रूप स्मरण (दशसु लकारेषु)

भू, हस्, गम्, दृश्, पा, स्था, सेव्, लभ्, वृध्, नी, हृ, याच् । अद्, अस्, इण्, या, पा (रक्षणे),

आस्, शी । हु, भी, हा, ह्री, मा, दा । दिव्, नश्, पद्, युध् । आप्, शक्, चि, अश् । लिख्,

कृ, मृ । रुध्, तन्, बन्ध्, चुर् ॥

इकाई-5 लिङ्गानुशासनम् (क) कण्ठस्थीकरणम् (ख) अर्थोदाहरणज्ञापनम्

पाठ्यपुस्तकम्

1. **लघु सिद्धान्तकौमुदी**- श्रीमद्वरदराजाचार्यप्रणीत:
   प्रकाशक:- चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन- वाराणसी ।
2. **प्रौढ रचनानुवादकौमुदी** - डॉ. कपिलदेव द्विवेदी
   प्रकाशक:-विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी ।
3. **लिङ्गानुशासनम्** - पं. सूर्यदर्शनदेवाचार्य:
   प्रकाशक:- हरयाणा साहित्य संस्थान, गुरुकुलम् झज्जर, हरयाणा ।

सहायकग्रन्थ:- बृहद् अनुवाद चन्द्रिका-चक्रधर नौटियाल 'हंस' शास्त्री
प्रकाशक:-मोतीलाल बनारसीदास ।

द्वितीयसत्रम्

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

तृतीयपत्रम्- प्राचीनभारतेतिहासः

(BSSAID-203 (1) Credit-4

Course Objective:

They will learn about the rise and expansion of the Gupta Empire in ancient India as well as how to establish regional kingdoms in various parts of India after the Empire fell. They can learn about early medieval India's society, economy, and culture. They can learn about the post-Mauryan political systems, particularly the Kushana and Satavahana ones; Gana-Sanghas, the Guptas' rise to power, the growth of the empire, art, architecture, literature, and so on They learn about how the agrarian economy, trade, and the urbanization of towns are changing.

Course Outcome:

Students will able to:

1. Understand the status of the society and culture of ancient India during the Palaeolithic, Mesolithic, Neolithic, Harappa, and Bronze ages.
2. Identify Approaches towards the sources and the study of ancient Indian history.
3. Understand about India's Vedic and post-Vedic periods, as well as the rise of Jainism and Buddhism as religions and cultures in ancient India.
4. They will exchange ideas about how to separate the Magadha Empire from the other sixteen Janapadas.
5. Understand Great king Asoka's Dhamma and his inscriptions.

इकाई प्रथम- मौर्योत्तर राजवंश: शुंग वंश, कण्व वंश, सातवाहन वंश: गौतमीपुत्र शातकर्णी और यज्ञ श्री सातकर्णी, कलिंग नरेश खारवेल।

इकाई द्वितीय-विदेशी राजवंश: इंडो ग्रीक: डेमेट्रियस और मिनेंडर, शक क्षत्रप: मथुरा और पश्चिमी क्षत्रप और पहलव, कुषाण वंश: विम कडफिसस और कनिष्क।

इकाई तृतीय-गुप्त वंश: चंद्रगुप्त प्रथम, समुद्रगुप्त, चंद्रगुप्त द्वितीय, कुमारगुप्त और स्कंदगुप्त, गुप्त काल की सांस्कृतिक उपलब्धि, गुप्त काल का पतन: गुप्त काल भारत का स्वर्ण काल।

इकाई चतुर्थ-भारत में हूणों का आक्रमण, वाकाटक: वाकाटक काल की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ, बंगाल का शशांक, असम का भास्करवर्मन।

इकाई पञ्चम-मौर्योत्तर काल से गुप्त काल तक सांस्कृतिक विकास, सामाजिक, आलथक, धार्मिक स्थिति का विकास, नव भक्ति परंपराओं का उदय: शैववाद, वैष्णववाद, शक्तिवाद, हीनयान, महायान,श्वेतांबर और दिगंबर।

प्रयोगात्मक गतिविधियाँ

पाठ्य पुस्तक-शर्मा, एल0 पी0: प्राचीन भारत, लक्ष्मी नरायण अग्रवाल, आगरा, 2022

सिंह, उपेन्द्र: प्राचीन और पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास पाषाण काल से 12 वीं शताब्दि ई0 rd, Delhi 2016.

Recommended Readings:

Goyal, S.R., Magadh, Satawahan, Kushan Samrajyon ka Yug (Hindi), Jaipur
Narain, A.K., The Indo-Greeks, New Delhi, 1996.
V.S Agarwal, Indian Art, Varanasi, Prithvi Prakasahan, 1972.
Percy Brown, Indian Architecture, Bombay, D.B.Taraporevala Sons &Co, 1940
James Harle, The Art & Architecture of the Indian Subcontinent, Hormonds worth, Penguin, 1988
Sharma, R.S., Prarambhik Bharat ka Parichay, (Hindi) New Delhi 2017.
Raychoudhury, H.C., Prācīn Bhārata Kā Rājanītika Itihāsa (Hindi), Allahabad,
Singh, U., A Histtory of Ancient and Early Medieval India, From The Stone Age To The 12th Century, Delhi 2016
Basham A. L. The Wonder that was India,London
Srivastava, K. C., Prachin Bharat ka Itihas Tatha Sanskriti, Allahabad, 2019
Jha D. N., Ancient India:In Historical Outline, 1997

1. ''   **आयातित पाठ्यक्रम**

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

अथवा

तृतीयपत्रम्- भारतीयसमाजः

Code- BSSAID-203 (2) Credit-4

प्रत्येक समाज की अपनी विशिष्ट संरचना होती है और प्रत्येक समाज के लिए कुछ संस्थाएं सार्वभौमिक होती हैं, अपनी कुछ विशिष्ट बातों के साथ वे प्रत्येक समाज में होती हैं। कुछ परिवर्तनीय कारक और प्रारम्भिक बिन्दु हैं जो समय के साथ समाज को बदलने में सक्षम बनाती हैं। समय चक्र भारतीय समाज की संरचना और परिवर्तनीय कारकों व परिवर्तनीय बिन्दुओं को संचालित करने वाली प्रक्रियाओं के साथ बदलते पहलुओं पर केंद्रित है।

उद्देश्यः भारतीय समाज पर इन दो पत्रों का अध्ययन करने के बाद, छात्र भारतीय समाज की मूल संरचना, इसकी ऐतिहासिक घटनाओं, समाज के आधारभूत दार्शनिक संस्थानों के बारे में एक धारणा प्राप्त कर सकता है। परिवर्तित होते संस्थानों, प्रक्रियाओं, कारकों और उन हस्तक्षेपों के बारे में जानें जो भारतीय समाज में परिवर्तन लाते हैं।

परिणामः इस पत्र से एक छात्रों में भारतीय समाज के बारे में परिचित होने की आशा है। यह भारतीय समाज का एक व्यापक, एकीकृत और अनुभव आधारित रूपरेखा प्रस्तुत करेगा। यह आशा की जाती है कि समाज में संचालित संरचना और प्रक्रियाएं, इस पाठ्यक्रम में प्रस्तुत भारतीय समाज में सक्रिय परिवर्तनीय कारक भी छात्रों को अपनी स्थिति और क्षेत्र की बेहतर समझ हासिल करने में सक्षम बनाएंगे।

इकाई प्रथम- भारतीय समाज की संरचना और भारतीय समाज के अध्ययन के लिए दृष्टिकोणः
1.1 धार्मिक संरचना, भाषायी रचना और नस्लीय रचना
1.2 अनेकता में एकता
1.3 राष्ट्रीय एकता- अर्थ, खतरे (सांप्रदायिकता, भाषावाद, क्षेत्रवाद)
1.4 भारतीय समाज के अध्ययन के दृष्टिकोणः संरचनात्मक-कार्यात्मक, मार्क्सवादी और अधनिस्थ
इकाई द्वितीय- हिंदू सामाजिक संगठन की ऐतिहासिक विशेषताएँ और आधार
2.1 वर्ण व्यवस्था और प्रासंगिकता
2.2 आश्रम और प्रासंगिकता
2.3 पुरुषार्थ और आश्रमों के साथ संबंध
2.4 कर्म का सिद्धांत
इकाई तृतीय-भारत में विवाह और परिवार
3.1 हिंदू विवाह संस्कार के रूप में, हिंदू विवाह के उद्देश्य, हिंदू विवाह के रूप।
3.2 हिदू संयुक्त परिवार-अर्थ और विघटन
3.3 मुसलमानों और जनजातियों के बीच विवाह
3.4 भारत में विवाह और परिवार में परिवर्तन
इकाई चतुर्थ-भारत में जाति व्यवस्था?
4.1 जाति का अर्थ, परिभाषाएं और विशेषताएं
4.2 जाति के कार्य और दुष्परिणाम
4.3 जाति व्यवस्था को प्रभावित करने वाले कारक
4.4 जाति व्यवस्था में हाल के परिवर्तन
इकाई पञ्चम- प्रयोगात्मक गतिविधियाँ

पाठ्य पुस्तक-राव, सी.एन. शंकर, भारतीय समाज का समाजशास्त्र, एस.चंद एंड कंपनी प्राइवेट लिमिटेड (संशोधित संस्करण), 2004.

अथवा

तृतीयपत्रम्- भारतस्वतन्त्रतासंग्रामस्वातन्त्र्योत्तरभारतम्

Code- BSSAID-203 (3) Credit-4

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य-

- 1857 की क्रान्ति का बोध कराना।
- बंगाल विभाजन व स्वदेशी आन्दोलन से अवगत कराना।
- हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन का बोध कराना।
- गांधीवादी युग से परिचय कराना।

परिणाम-

- 1857 की क्रान्ति के बोध से अन्याय व अधर्म के विरूद्ध आवाज उठाने की योग्यता जागृत हो जाती है।
- स्वदेशी आंदोलन के अध्ययन से स्वदेशी शिक्षा, चिकित्सा व पदार्थों का स्वयं उपयोग करते हुए दूसरों को भी उपयोग करने के लिए प्रेरित करता है।
- क्रांतिकारी आंदोलनों के उद्‌भव के अध्ययन से अपने नीति, नियम, परम्परा, सभ्यता तथा संस्कृति के सत्याग्रही होकर समाज में व्याप्त कुरीतियों व अधर्मों का दमन व निर्मूलन करने की योग्यता जागृत हो जाती है।

इकाई प्रथम-1857 का क्रान्ति, 1857 के क्रान्ति कारण, क्रान्ति की प्रकृति और उसका प्रभाव, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (1885-1905) में गरमदल और नरमदल, राष्ट्रवाद का जन्म।

इकाई द्वितीय-बंगाल विभाजन, स्वदेशी आंदोलन, क्रांतिकारी आंदोलनों का उद्‌भव, भारत में क्रांतिकारी आंदोलनों की मुख्य गतिविधियों के कारण, गदर पार्टी- गठन और गतिविधियाँ।

इकाई तृतीय-हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन, भगत सिंह, बटुकेश्वर दत्त, सुभाष चंद्र बोस, आजाद हिंद फौज का गठन, होमरूल आंदोलन।

इकाई चतुर्थ-गांधीवादी युग, असहयोग आंदोलन, साइमन कमीशन और नेहरू रिपोर्ट, सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन, क्रिप्स मिशन (सांप्रदायिकता का उदय-माउंटबेटन की योजना और विभाजन), 1947 का भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम।

इकाई पञ्चम-स्वतंत्र्योत्तर भारत, पंचवर्षीय योजना का प्रारम्भ, 1962 और 1971 का युवा राष्ट्रीय दल- मार्क्सवादी, समाजवादी, राष्ट्रवादी और क्षेत्रीय दल, जेपी आंदोलन और आपातकाल।
- प्रयोगात्मक गतिविधियाँ

पाठ्य पुस्तकें-

1. महाजन, बी.डी. आधुनिक भारतीय इतिहास, एस.चंद, नई दिल्ली, 2022
2. चानरा, बी. इंडियाज स्ट्रगल फॉर इंडिपेंडेंस, एस.चंद, नई दिल्ली, 2022

सहायक ग्रन्थ-

1. रामकृष्ण मुखर्जी: ईस्ट इंडियन कंपनी का उदय और पतन
2. आर.सी. मजूमदार, एच.सी. रॉयचौधुरी और कलिकिंकर दत्ता: भारत का एक उन्नत इतिहास (हिंदी में: भारत का बृहद इतिहास)
3. एस.सी. सरकार और के.के. दत्ता: मॉडर्न इंडियन हिस्ट्री, वॉल्यूम-2 (हिंदी में: आधुनिक भारत का इतिहास)
4. क्रिस्टोफर बेली: इंडियन सोसाइटी एंड द मेकिंग ऑफ ब्रिटिश एम्पायर एडवर्ड थॅम्पसन एंड जी.टी. गैरत: भारत में ब्रिटिश शासन का उदय और पतन।
5. टी.जी.पी.स्पीयर: द ऑक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑफ मॉडर्न इंडिया।
6. जी.एस.सरदेसाई: मराठों का नया इतिहास, (हिंदी में: मैराथन का नवीन इतिहास)
7. ए.आर. देसाई: भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि हिंदी में: भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक प्रतिष्ठा)
8. राम लखन शुक्ल: आधुनिक भारत का इतिहास।
9. सत्य राव: भारत में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद।
10. जी.एन. सिंह: भारतीय संवैधानिक और राष्ट्रीय विकास में मील का पत्थर (हिंदी में भारत का संवैधानिक और राष्ट्रीय विकास)
11. एससी सरकार: बंगाल पुनर्जागरण (हिंदी में: बंगाल का नवजागरण)।

द्वितीयसत्रम्

तृतीयपत्रम्- Advanced English Communication
Code-BSSAAE-204 Credit-2

पूर्णाङ्काः–100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः–75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः–25
समयः–होरात्रयम्

Objectives:

Unit1-Communicate easily with and enhance the ability to understand native speakers
Unit 2- Remove personal barriers and enhance confidence in a group setting and in work places
Unit3-Help translate L2 from L1 in a more efficient manner
(L1 is the mother tongue & L2 is the Official Language – here English)
Unit4 –Enhance formal and business writing skills

Course Specific Outcomes

- Produce words with right pronunciation
- Develop vocabulary and improve the accuracy in grammar
- Develop the confidence to speak in public
- Demonstrate positive group communication exchanges.
- Ability to speak and write clearly in standard, academic English

Method of Teaching & Assessment-Videos, Audio clippings, discussion, written and oral exercises

Unit-1:-Different types of Salutations,
Differences between formal and informal speech, between standard and Colloquial language

Unit-2:Verbal and Non-verbal Communication

- Personal–Social–Business
- Inter-personal and Group Communication
- Professional Communication

Unit3-Reading Comprehension

- Analysis and Interpretation
- Translation (from Indian Languages to English and vice-versa)
- Loud Reading, Drilling for pronunciation and fluency
- Listening Comprehension

Unit4-Writing Skills

- Report Writing
- Paraphrasing
- Professional Writing
- Argumentative Essays

Text books:

- English Grammar in Use, *4th Edition, Cambridge by Raymond Murphy*
- Oxford Handbook for the Foundation Programme *by Tim Raine & James Dawson & Stephan Sanders & Simon Eccles – eBook*

Suggested Sources:

- *learnenglish.britishcouncil.org*
- *learnenglish.britishcouncil.org/general-english/magazine-zone*
- British Council e-Books for free - *pdfdrive.com/british-council-books.html*
- Check Your Vocabulary for English for the IELTS Examination –*eBook*

द्वितीयसत्रम्

पञ्चमपत्रम्- योगचिकित्सा-२

Code- BSSASE-205 (1) Credit-3

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य :

- भारतीय पुरातन चिकित्सा पद्धति के समन्वित् स्वरूप का बोध कराना ।
- समन्वित चिकित्सा पद्धति के व्यावहारिक एवं प्रयोगात्मक अभ्यास द्वारा साध्य एवं असाध्य रोगो का निदान।
- योग, आयुर्वेद, पञ्चकर्म, षट्कर्म, नेचुरोपैथी, आहार चिकित्सा, यज्ञचिकित्सा, एक्यूपंचर, एक्यूप्रेशर एवं फिजियो थैरेपी जैसे समन्वित् भारतीय पुरातन चिकित्सा पद्धतियों के सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक बोध द्वारा योग्य एवं प्रशिक्षित व्यक्तित्व का निर्माण करना।

परिणाम :

- समन्वित चिकित्सा पद्धति में प्रशिक्षित विद्यार्थी समाज में साध्य-असाध्य रोगों से पीडित रोगियों को उपचार देकर उन्हें सम्पूर्ण आरोग्य का लाभ प्रदान करता है एवं भारतीय पुरातन चिकित्सा व्यवस्था के प्रचार प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है ।
- सेवा निष्ठ आजीविका का आलम्बन लेकर स्वयं आत्मनिर्भर होता हुआ अन्यों को भी रोजगार परख सेवा क्षेत्र में नियोजित करता है, उपकार परख उपचार की एक स्वस्थ परम्परा का संवाहक बनकर समाज को शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य के मार्ग पर अग्रसर करता है ।

इकाई 1-मिट्टी चिकित्सा, सूर्य चिकित्सा

इकाई 2-जल चिकित्सा (हाइड्रोथेरेपी)

इकाई 3-मसाज के विविध प्रकार एवं प्रयोग

इकाई 4-प्राकृतिक चिकित्सा (नैचुरोपैथी)

इकाई 5-वैकल्पिक चिकित्सा एवं षट्कर्म

पाठ्यपुस्तकम्-

समग्र उपचार, प्रकाशन- द्विव्य प्रकाशन, द्विव्य योग मन्दिर ट्रस्ट, हरिद्वार।

अथवा

पञ्चमपत्रम्- Intermediate Knowledge of Vocal & Instrumental

Code- BSSASE-205 (2) Credit-3

UNIT- I Merits & Demerits of Vocalist, Margi /Desi Sangeet , Brief Definition about Raag, five important Rules of Raag , Jaati of Raag & Knowledge of 10 Thaat its Basic Speciality, Brief intro of Mel raag.

UNIT- II Biography of Musicians- Bhimsen Joshi, Pandit Vishnu Narayan Bhatkhande, Effect of Sound in our practical life, **Definitions:-** Gamaks-(Meed, kan,Khatka,Murki), Alankar no 5 to 10 (According to Bhatkhande Kramik pustak malika-1), AROH-AVROH-PAKAD-VADI-SAMVADI of Raag Yaman. Merits & Demerits of Musicians, Definition of following terms: Sum, Tali, Khali &Vibhag, Tuning of Tabla.

UNIT- III Practice of Previous Ten Alankar, Practice of Aroh , Avroh ,Pakad in Raag Yaman & Lakshan Geet, Practice of two Bhajan/Geet/ghazal Based on Raag (Yaman/Bhairavi/Darbari-kanhda)

UNIT- IV Tabla– Playing Skill of Basic Bol (NA, TI Teen, Dha Dhi, Dheen) One Kayda In Teentaal.

Harmonium- Playing Skills of One (Bhajan, Patriotic Song)

अथवा

पञ्चमपत्रम्- गोविज्ञानम्

Code- BSSASE-205 (3) Credit-3

उद्देश्यः-

- गो सम्बन्धित साहित्यों से परिचय कराना।
- गो के विभिन्न देशी नस्लों से अवगत कराना।
- गो के सामाजिक, आर्थिक एवं आध्यात्मिक महत्व का बोध कराना।

इकाई 1-गो शब्द का अर्थ एवं पर्यावाची शब्द, गोवंश परिचय (नस्लें), देशी गोवंश तथा विदेशी गायों में अन्तर, गो का अन्य पशुओं से वैशिष्ट्य, गो माहात्म्य के विषय में महापुरुषों के विचार, प्राचीन काल में गो संवर्धन का स्वरूप तथा वर्तमान काल में गोसंवर्धन का स्वरूप, भारत के विभिन्न क्षेत्रों में पायी जाने वाली गो नस्लें एवं पालन।

इकाई 2- संस्कृत वाङ्मय में गो का महत्त्व, वेदों के अनुसार गो महिमा, स्मृतियों, उपनिषदों आयुर्वेद ग्रन्थों, पुराणों, महाभारत, रामायण एवं अन्य ग्रन्थों के अनुसार गो महिमा।

इकाई 3- विभिन्न आयुर्वेद ग्रन्थों के अनुसार- पञ्चगव्य का औषधीय प्रभाव एवं आरोग्यता-

1. गोदुग्ध
2. गोदधि
3. गोनवनीत तथा गोघृत
4. गोमूत्र
5. गोमय (गोबर), गोवर्ण एवं गो आयु का वैशिष्ट्य।
6. गोवंश सुधार की आवश्यकता, दुधारू तथा स्वस्थ गोवंश।

इकाई 4- गो मेध यज्ञ का वास्तविक स्वरूप, गोदान की परम्परा एवं गोपूजा का माहात्म्य, गो हत्या एवं मांस सेवन का निषेध, वर्तमान परिपेक्ष्य में गोसंवर्धन की आवश्यकता, लाभ एवं इसकी वैज्ञानिकता, गोसेवा द्वारा विभिन्न रोगों से मुक्ति पाप का क्षय पुण्य की प्राप्ति, उन्नत कृषि हेतु गो संरक्षण, जैविक खाद कीटनाशक के रूप में गोंमूत्र का प्रयोग।

इकाई 5-सुन्दर समृद्ध आर्थिक आत्मनिर्भर व्यक्ति तथा समाज के लिये गो का महत्त्व, भारत वर्ष की प्रमुख गोशालाएं एवं गोधन, वर्तमानकाल में गोपालन की समस्या एवं समाधान, उन्नत बैल अथवा नन्दी का सदुपयोग, गो संवर्धन में योगर्षि स्वामी रामदेव जी महाराज (पतञ्जलि योगपीठ) का योगदान, गोशालाओं की आत्मनिर्भता के लिये गोमूत्र संयन्त्र तथा गोमय (गोमय) से बनी समिधा एवं अन्य वस्तुओं का निर्माण, गो आधारित प्रेरक कथाएं एवं सूक्तियां ।

परिणामः-

- देशी गोवंश संरक्षण के प्रति सकारात्क अभिरूचि का विकास होगा।
- गो को आर्थिक रूप से प्रयोग एवं विनियोग करने में सहायता प्राप्त होगी।

पाठ्यपुस्तकम्-

गोविज्ञानम्- Dr. Swami Parmarthdev, Divya Prakashan

द्वितीयसत्रम्

षष्ठपत्रम्- सनातनसंस्कृतिबोधः -II

Code- BSSAVA-206 (1) (Credit-3)

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य

- सामवेद एवं अथर्ववेद के चयनित प्रसिद्ध मंत्रों का वाचन एवं परिचयात्मक ज्ञान कराना।
- तैतिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक व श्वेताश्वतर के चयनित प्रसंगों से अवगत कराना।
- देवयज्ञ, ब्रह्मयज्ञ, प्रातः जागरण मंत्र, शयन मंत्रो को आत्मसाध् कराना।
- वर्णाश्रम व्यवस्था, पञ्चमहाव्रत, पञ्चमहाभूत, पञ्चप्राण से अवगत कराना।

इकाई 1- सामवेद एवं अर्थववेद के चयनित मंत्र।

इकाई 2- उपनिषद (तैत्तरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक, श्वेताश्वतर) के चयनित प्रंसग।

इकाई 3- रामायण एवं महाभारत का चयनित प्रसंग एवं नवधा भक्ति का सामान्य परिचय।

इकाई 4- दैनिक दिनचर्या के विशेष मन्त्र, देवयज्ञः, जीवन दर्शन, पंचमहायज्ञ।

इकाई 5- महाभूत, पंचप्राण, वर्ण व्यवस्था, पंचकोश, पञ्च महाव्रत, अष्टाङ्गहृदय।

परिणाम

- उपर्युक्त चयनित मंत्रों को शुद्धतापूर्वक वाचन एवं व्याख्यान में कुशल होना।
- उपरोक्त उपनिषद् के प्रसिद्ध प्रसंगों का विस्तृत ज्ञान अर्जित होना।
- पञ्चमहायज्ञों को अपने जीवन में विनियोग करने में समर्थ होना।

निर्धारित पाठ्यपुस्तकः- भारतीय संस्कृति बोध, प्रो0 साध्वी देवप्रिया, दिव्यप्रकाशन

अथवा

षष्ठपत्रम्-योगविज्ञानप्रयोगात्मकम्

Code- BSSAVA-206 (2) (Credit-3)

Objectives: Following the completion of the course, students shall be able to:

- Understand the benefits, procedure and contraindications of all practices.
- Demonstrate each practice with confidence and skill.
- Explain the procedure and subtle points involved.

Unit I: Eight Baithak by Yogrishi Swami Ramdev ji **(9 Hours)**

Ardhbaithak, Purnabaithak, Rammurtibaithak, Pahalwani baithak-1, Pahalwanibaithak-II. Hanuman baithak -1, Hanuman baithak-11,

Unit II: Twelve Dand by Yogrishi Swami Ramdev ji **(9 Hours)**

Simple Dand, RammurtiDand, VakshvikasakDand, Hanuman Dand, VrishchikDand-I, VrishchikDand-II, Parshvadand, Chakradand, Palatdand, Sherdand, Sarpdand, Mishradand(mixed Dand)

Unit III: Surya Namaskara &Yogasana (Supine lying postures) **(9 Hours)**

Suryanamaskar, Naukasana, Pavanamuktasana, Utthana-padasana, Padavrittasana, Chakrikasana,Chakkichalana, ArdhaHalasana, Halasana, Setubandhasana, Sarvangasana, Matsyasana,Chakrasana, Shavasana.

Unit IV: Pranayama **(9 Hours)**

NadiShodhana (Technique 1: Same Nostril Breathing), NadiShodhana (Technique 2: AlternateNostril Breathing), NadiShodhana (Technique 3: Alternate Nostril Breathing + Antarkumbhak);NadiShodhana (Puraka + AntarKumbhak + Rechaka + BahyaKumbhak) (1:4:2:2);

Unit V: Mudra & Shatkarmas (Only One kriya) **(9 Hours)**

Hasta Mudra: Chin, Jnana, Hridaya, Bhairav, Yoni, Pran, Apan, Apanvayu, Shankh, Kamajayi,Shatkriya, Neti (Jalneti, Rubber Neti)

Continuous Evaluationby the Teachers

TEXT BOOKS

1. Balkrishna Acharya: (2015), DainikYogabhyasakram, DivyaPrakashan, Haridwar.
2. Randev Y.S. 2015: Dand-baithak, DivyaPrakashan, Haridwar
3. Saraswati S. S. (2006). Asana Pranayama and Mudra Bandha, "Yoga Publication Trust." Munger,**BihContinuous Evaluationby the Teachers**

बी.ए. संस्कृतम् तृतीयसत्रम्

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

प्रथमपत्रम्- सौन्दरानन्दनकाव्यदीपिके (2-4)

Code - BSSAMJ-301, Credit-6

उद्देश्य-

- महाकवि बाणभट्ट की कृति ''शुकनासोपदेश'' के माध्यम से महामन्त्री शुकनास के द्वारा धर्म का ज्ञान प्राप्त कराना ।
- अम्बिकादत्तव्यास जी विरचित शिवराजविजयम् के द्वारा सूर्य का वर्णन, महामुनि का दर्शन तथा राज्य की दशा का ज्ञान कराना ।
- महाकविकालिदासविरचितम् अभिज्ञानशाकुन्तलम् के माध्यम से दुष्यन्त विषयक संवाद दुर्वासा का श्राप तथा शकुंतला के प्रकृति प्रेम का बोध कराना ।

परिणाम-

- कादम्बरीस्थ शुकनासोपदेश के अध्ययन से विद्यार्थी लक्ष्मी/श्री की महत्ता और इससे होने वाले अहङ्कार आदि को सरलता से जानकर उसके बोधन में समर्थ हो जाते हैं।
- गद्यकाव्य अध्ययन से विद्यार्थी गद्य की विद्याओं और विभिन्न शब्दों के पर्यायवाची को जानकर संस्कृत बोध की ओर अग्रसर होता है।
- नाटक को जानने से व्यक्ति रङ्गमंच पर प्रस्तुति देने में उत्कृष्ट रूप से सक्षम हो जाता है।
- पद्य के ज्ञान से श्लोक रचना में समर्थ होते हैं।
- श्लोकों में प्रयुक्त होने वाले अलंकारों को जानने में पहचाने में समर्थ हो जाते हैं।

इकाई-1 गद्यम्- (कादम्बरीतः शुकनासोपदेशः)

एवं समतिक्रामत्सु दिवसेषु ....चिन्तितापि वञ्चयति।

राजा चन्द्रपीडं युवराजकार्यभारं दित्सते । युवराजस्य शुकनासस्य गृहे गमनम् । यौवनस्य दोषाः । क्थमुत्तममाचरणीयम् ।

(क) कविपरिचयः (ख) गद्यत्रय्यां कादम्बर्याः स्थानम् / गद्यव्याख्या

(ग) कथासारः / काव्यगतविशेषताः

इकाई-2 गद्यम्- (कादम्बरीतः शुकनासोपदेशः)

एवं विधयापि चानया .... स्वभवनम् आजगाम।

शुकनासेन चन्द्रपीडं लक्ष्मी सद्गुणमुक्ताऽपि लक्ष्मी दोषप्रिया इति उपदेशः।

(क) कविपरिचयः (ख) गद्यत्रय्यां कादम्बर्याः स्थानम् / गद्यव्याख्या

(ग) कथासार: / काव्यगतविशेषता:

इकाई-3 गद्यकाव्यम्- शिवराजविजयम् (प्रथमविरामस्य प्रथमो निश्वास:)

सूर्यवर्णनम्, गौरबटुशिष्यस्य गुरवे पुष्पचयनं, महामुने: दर्शनम् ।

(क) कविपरिचय: (ख) गद्यव्याख्या (ग) कथासार: / काव्यगतविशेषता:

इकाई-4 गद्यकाव्यम्- शिवराजविजयम् (प्रथमविरामस्य द्वितीय निश्वास:)

(क) कविपरिचय: (ख) गद्यव्याख्या (ग) कथासार: / काव्यगतविशेषता:

इकाई-5 नाटकम्- अभिज्ञानशाकुन्तलम् - चतुर्थ अंक

दुष्यंतविषयक: संवाद:, दुर्वासाश्राप:, अभिज्ञानचिह्नेन शकुंतलाया: अभिज्ञा: ।

शकुंतलाया: प्रकृतिप्रेम: ।

(क) कविपरिचय: (ख) गद्यव्याख्या (ग) कथासार: / काव्यगतविशेषता:

पाठ्यपुस्तकम्

1. **शुकनासोपदेश:**- व्याख्याकार: रामनरेश झा

   प्रकाशक:- मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा.लि.देहली।

2. **शिवराजविजयम्**- महाकविविश्रीमदम्बिकादत्त व्यासप्रणीत:

   प्रकाशक:- मोतीलाल बनारसीदा: पब्लिशर्स प्रा. लि. देहली ।

3. **अभिज्ञानशाकुन्तलम्**- महाकविकालिदासविरचितम्

   प्रकाशक:- (क) चौखम्भा विद्याभवन वाराणसी ।

   (ख) चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी ।

4. **नीतिशतकम्**- भर्तृहरिविरचितम्, प्रकाशक:- चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी ।

द्वितीयपत्रम्- ईशोपनिषन्निरुक्त-ऋग्वेदादिभाष्यभूमिकाः

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

Code - BSSAMJ-302, Credit-5

उद्देश्य-

- इसमें वैदिक साहित्य के इतिहास तथा श्री महर्षि दयानन्द विरचित ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के ईश्वर प्रार्थना विषय का ज्ञान कराना ।
- ईशोपनिषद् के सर्वत्र ईशदृष्टि, कर्म की विधि, तात्त्विक दृष्टि तथा ज्ञान व कर्म मार्ग का ज्ञान कराना ।
- निघण्टु शब्द की व्याख्या, पद के चार भेद तथा 'उतत्व पश्यन्....' इत्यादि मन्त्रों का बोध प्रदान कराना।

परिणाम-

- ईश्वर प्रार्थनादि विषयों के जानने से विद्यार्थी ईश्वर भक्ति के प्रति जागृत होता है।
- उपनिषदों के ज्ञान से वैदिक संस्कृति को समझने में अग्रसर होता है।
- विभिन्न प्रकार के शब्दों के पर्यायवाची और निमित्त बोध को जानने से विद्यार्थी का वाक्य रचना कौशल उन्नत होता है।
- वैदिक शब्दों के अर्थज्ञान में समर्थ होते हैं।
- कर्तव्याकर्तव्य के ज्ञान से व्यवहार कुशल होते हैं।
- वेदाङ्ग परिचय एवं ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के अध्ययन से विद्यार्थी वेद-वेदांग का बोधपूर्वक अध्ययन कर वेदांग ज्ञान में अन्यों को प्रवृत्त करता है।
- ईशोपनिषद् एवं शिक्षावल्ली के अध्ययन से उपासना पूर्वक शिक्षा की कुशलता पाकर स्वयं के जीवन में उत्कृष्टता लाता है।

इकाई-1 वैदिक वाङ्मय का इतिहास

इकाई-2 वेदाङ्गपरिचय एवं ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका (ईश्वरप्रार्थनाविषयः)

इकाई-3 ईशोपनिषद्- सर्वत्र ईशदृष्टिः, कर्मविधिः, अभेददृष्टिः, ज्ञानमार्गः, कर्ममार्गः

शिक्षावल्ली तै.उ.-शीक्षाव्याख्या, संहितोपासना, जपक्षेममन्त्र, ब्रह्मस्थानम्,
ओंकारोपासना, मोक्षसाधनम्।

इकाई-4 निरुक्तम् (प्रथमाध्यायस्य 1-10 खण्ड) अथापि नेत्येष इति.... परिभये ।
निघण्टुशब्दस्य व्याख्या, पदस्य चत्वारः भेदाः, क्रियाभेदाः, निपाताः इत्यादयः ।

इकाई-5 निरुक्तम् (प्रथमाध्यायस्य अवशिष्टः)
अथापि याज्ञे....,उतत्वःपश्यन्....,उतत्वं सख्ये....,साक्षात्कृतधर्माणः....इत्यादीनां मन्त्राणां व्याख्या ।

पाठ्यपुस्तकम्

1. **वैदिक वाङ्मय का इतिहास**, पं. भगवद् दत्त, विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली।
2. **वेदाङ्गपरिचय**-आचार्य आनन्दप्रकाश
   प्रकाशकः-आर्ष शोध-संस्थान अलियाबाद, आन्ध्रप्रदेश ।
3. **ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका**-श्रीमत्स्वामिदयानन्दसरस्वती

प्रकाशक:- (क) आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट।

(ख) रामलाल कपूर ट्रस्ट ।

4. **ईशोपनिषद्**- एकादशोपनिषद्-डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालङ्कार

प्रकाशक:- विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द ।

5. **निरुक्तम्**- आचार्य यास्क

श्री चन्द्रमणि विद्यालंकार पालीरत्न

प्रकाशक:- हरयाणा साहित्य संस्थान गुरुकुल झज्जर (हरयाणा) ।

सहायकग्रन्थः- **ईशोपनिषद्**- ईशादि नौ उपनिषद्, **प्रकाशकः**- गीताप्रेस, गोरखपुर ।

निरुक्त-श्री मुकुन्द झा शर्मा, **प्रकाशकः**- चौखम्भा, संस्कृत प्रतिष्ठान दिल्ली

निघण्टु तथा निरुक्त - लक्ष्मणस्वरूप (हिन्दी भाष्य-सत्यभूषण योगी, शशि कुमार)

मोतिलाल बनारसीदास, दिल्ली

तृतीयपत्रम्- कृत्यप्रत्ययसमासाः

Code - BSSAMN-303, Credit-4

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य-

- व्याकरण चन्द्रोदय में उल्लेखित कृत्य और कृत् प्रत्ययों की सूत्रात्मक व्याख्या और रूपसिद्धि का बोध कराना।
- पाणिनीय अष्टाध्यायी में वर्णित अव्ययीभाव व तत्पुरुष समास का विस्तृत बोध कराना ।
- बहुव्रीहि और द्वन्द्वसमास सम्बन्धित सूत्रों की व्याख्या और रूपसिद्धि का ज्ञान कराना ।

परिणाम-

- संस्कृत भाषा में प्रयुक्त होने वाले कृदन्त शब्दों के बोध से संभाषण में विशेष निपुणता आती है।
- संस्कृत भाषा में प्रयुक्त होने वाले समस्त समासान्त पदों का ज्ञान होने से संस्कृत साहित्य को समझने व बोधन कराने में समर्थ होता है।
- भाषा में प्रयुक्त होने वाले समासान्त पदों का बोध होने से अर्थज्ञान में सरलता रहती है।
- अन्य ग्रन्थों के शब्दों को देखकर समास निर्धारण में कुशल हो जाता है।

सूत्रव्याख्या एवं रूपसिद्धि

इकाई-1 कृत्यप्रत्ययः- तव्यत्, तव्य, अनीयर्, यत्, ण्यत् क्यप् ।

पूर्वकृदन्तः-ण्वुल्, तृच्, कः, ष्वुन्, शः, ण्युटादयः ।

इकाई-2 उत्तरकृदन्तः

खमुञ्, णमुल्, तुमुन्, खल्, ल्युटादयः ।

इकाई-3 समास-अव्ययीभावः

अव्ययं विभक्ति...., यथा सादृश्ये, अनुर्यत्समया, यस्यचायामः इत्यादयः ।

इकाई-4 तत्पुरुषः

द्विगुश्च, सामि, तत्र, वर्णो वर्णेन, कर्मणि च इत्यादयः ।

इकाई-5 बहुव्रीहिः-शेषो बहुव्रीहिः, दिङ्नामान्यन्तराले, तेन सहेति तुल्ययोगे इत्यादयः।

द्वन्द्व-चार्थे द्वन्द्वः।

पाठ्यपुस्तकम्

1. **व्याकरण चन्द्रोदय**- डॉ साध्वी देवप्रिया
   प्रकाशकः- दिव्य प्रकाशन पतंजलि योगपीठ हरिद्वार
2. **लघु सिद्धान्तकौमुदी**-वरदराजाचार्यप्रणीता
   प्रकाशकः-चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।

सहायकग्रन्थः-

1. **बृहद् अनुवाद चन्द्रिका**- चक्रधर नौटियाल 'हंस' शास्त्री
   प्रकाशकः-मोतीलाल बनारसीदास ।

तृतीयसत्रम्

चतुर्थपत्रम्- स्वर्णकालेतिहासः

Code- BSSAID-304 (1) Credit-2

Course Objectives-
The main objective of this paper is to understand historical processes between 3rd Century AD and 6th Century AD. Though the chronology of the paper starts at 3rd Century AD, an initial background is given starting from thst post Mauryan period starting with the Gupta and ending with post Gupta scenario,

Unit I: Political History of Gupta Period 7 Hours
Origin and development of Gupta Dynasty, Early History of Guptas- ShriGupt and Ghatotkach, Founder of the great Gupta Dynasty- Chandragupta I, Achievements of Samudragupta, Mighty, Virtuous, Digvijayi and the great Gupta king who presented the concept of Greater India.

Unit II: Political History of Gupta Period 7 Hours
Achievements Chandrgupta Vikramadity, Kumargupta and his successor- Skandgupta, Budhgupta and Decline of the Imperial Guptas, Government and functions of the Council of Ministers during the Gupta period, Officials of the Gupta empire.

Unit III:Religious Status in the Gupta Period 8 Hours
Vedic Religion- Surya, Indra, agni, Varun, Yam, Kuber, Tenacity and Sadhana, Life of Tapovan, Origin of Creation, Method of Yagya. public beliefs and rituals. **Puranic Religions**: **Shaivism**: Bhakti Tradition of Shavism: Pashupat Tradition, Kapalik Tradition, Kalmukh Tradition, Skand, Ganesh and Kartikey, Bhakti Tradition, **Vaishnavism:** Panchratr, Bhagavat, Krishna and doctrine of embodiment: Bhagavan Vishnu ke das Avatar, **Shaktism:** Trideviyan- Historical sources of Lakshmi, Durga and Saraswati.

Unit IV:Literary and Creator 8 Hours
Development of Sanskrit literature - Fine literature like Avadan, Jataka Mala, Prayag Prashasti composed by Harishena, great poet Kalidas's texts, authors like Bharavi, Bhatti, Shudrak, Visakhadatta, Arthashastra, Dharmashastra, Buddhist literature and Jain literature. Development of Prakrit literature, Apabhramsa literature and Tamil literature.

Course Outcome:
The paper ensures that the students learn the changes in political, social, economic and cultural scenario happening during this chronological span. It will also teach them how to study sources to the changing historical processes.

Recommended Readings:
Pandey, V.C. Prachin Bharat ka Rajnitik Tatha Sanskritik Itihas, 2 Parts, Central Book Dipo Allahabad,
Sharma, L.P.: History of Ancient India,
Raychoudhury, H.C., Prācīn Bhārata Kā Rājanītika Itihāsa (Hindi), Allahabad,
Singh, U., A History of Ancient and Early Medieval India, From The Stone Age To The 12th Century, Delhi 2016
Basham A. L. The Wonder that was India, London

अथवा

चतुर्थपत्रम्- समाजशास्त्रीयसिद्धान्तम्

Code:BSSAID-304 (2) Credit-2

उद्देश्यः

- सामाजिक परिवर्तन से अवगत कराना।
- सामाजिक परिवर्तन के सिद्धान्तों का बोध कराना।
- विकास के प्रारूप से अवगत कराना।
- भारत के संदर्भ में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं से परिचित कराना।

परिणाम-

- सामाजिक परिवर्तन के बोध से सामाजिक विषमताओं को दूर करने में सक्षम हो जाता है।
- सामाजिक परिवर्तन के सिद्धान्तों के बोध से सामाज के विकासपूर्वक अन्याय एवं अधर्म के विरुद्ध संघर्ष करने की योग्यता जागृत हो जाती है।
- विकास के प्रारूपों के अध्ययन से पूंजीवादी, समाजवादी व गांधीवादी विचारधाराओं के तुलनात्मक अनुशीलन से राष्ट्र में एकत्व, सह-अस्तित्व व विश्वबन्धुत्व की स्थापना करने में तत्पर हो जाता है।
- भारत के सन्दर्भ में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं के ज्ञान से अपनी संस्कृति के प्रति दृढ़ आस्था व विश्वासपूर्वक पुरातन व सनातन संस्कृति का अनुगामी बनकर विश्वकल्याण में प्रवृत्त हो जाता है।

सामाजिक परिवर्तन और विकास

परिवर्तन प्रकृति का नियम है और प्रत्येक समाज परिवर्तन के अधीन है। सामाजिक परिवर्तन हमेशा समाजशास्त्रीय अध्ययन का एक केंद्रीय सरोकार रहा है। परिवर्तन के भिन्न रूप होते है। परिवर्तन की अपनी पद्धति होती है जिसे विभिन्न सिद्धांतों द्वारा वर्णित किया जाता है। परिवर्तन अक्सर विभिन्न कारकों से प्रेरित होता है। यह प्रश्न-पत्र छात्र को ऐसी प्रक्रिया, सिद्धांतों और कारकों के बारे में कुछ विचार प्रदान करने के लिए निरूपित किया गया है।

इकाई प्रथम–सामाजिक परिवर्तन

1.1 अर्थ और प्रकृति
1.2 सामाजिक विकास और सामाजिक प्रगति: अर्थ और विशेषताएं
1.3 सामाजिक विकास: अर्थ और विशेषताएं
1.4 परिवर्तन के कारक: सांस्कृतिक, तकनीकी, जनसांख्यिकीय

इकाई द्वितीय-सामाजिक परिवर्तन के सिद्धांत

2.1 विकासवादी सिद्धांत
2.2 प्रकार्यवादी सिद्धांत
2.3 संघर्ष सिद्धांत
2.4 चक्रीय सिद्धांत

इकाई तृतीय-विकास के प्रारूप

3.1 सामाजिक विकास के संकेतक
3.2 पूंजीवादी
3.3 समाजवादी
3.4 गांधीवादी

इकाई चतुर्थ–भारत के सन्दर्भ में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाएँ

4.1 संस्कृतिकरण
4.2 पश्चिमीकरण
4.3 आधुनिकीकरण
4.4 धर्मनिरपेक्षीकरण

इकाई पञ्चम- प्रयोगात्मक गतिविधियाँ

पाठ्य पुस्तकें-1. स्टीवन, वागो, सोशल चेंज, पियर्सन अप्रेंटिस हॉल, 2003 5वां रेव. एड।

संदर्भ ग्रन्थ-1. जयराम कंसल, सोशल चेंज एंड डेवलपमेंट, विजडम प्रेस (आई.एस.बी.एन) (सी.बी.सी.एस), 2004
2. सिंह, वाई., भारतीय परंपरा का आधुनिकीकरण: सामाजिक परिवर्तन का एक व्यवस्थित अध्ययन, फरीदाबाद: थॉम्पसन प्रेस लिमिटेड, 1973

अथवा

चतुर्थपत्रम्- वैशेषिकदर्शनम् (प्रथमाध्यायभाष्यसहितम्)

Code: BSSAID-304 (3) Credit-2

उद्देश्य :-

- वैशेषिक दर्शन में निहित धर्म के स्वरूप, दव्यगुणकर्म के भेद, लक्षण व कार्यकारणभाव आदि का बोध कराना।
- वैशेषिक दर्शन के सूत्रार्थ व भाष्यार्थ को सहज रीति से हृदयङ्गम कराना।

परिणाम-

- वैशेषिक दर्शन में निहित धर्म का स्वरूप एवं दव्यगुणकर्म विषयक स्पष्ट बोध प्राप्त कर निर्भ्रान्त ज्ञान का प्रसार करता है।
- वैशेषिक दर्शन के सूत्रार्थ व भाष्यार्थ का सहजरीति से ज्ञान कराकर योग्य विद्यार्थियों का निर्माण करता है।

इकाई -1 धर्मस्य स्वरूपं लक्षणं च (अध्याय-1 आह्निक-1 सुत्र 1-4)

इकाई -2 द्रव्यगुणकर्मणां भेदः, साधर्म्यवैधर्म्यः, लक्षणं च (अध्याय-1 आह्निक-1 सुत्र 5-17)

इकाई -3 द्रव्यगुणकर्मणां कार्यकारणभावः (अध्याय-1 आह्निक-1 सुत्र 18-31)

इकाई -4 सामान्य विशेषयोः लक्षणं भेदाश्च (अध्याय-1 आह्निक-2 सुत्र 1-17)

पाठ्यपुस्तकम् : -

वैशेषिक दर्शन (प्रशस्तपादभाष्य सहित) आनन्द प्रकाश।
प्रकाशक- आर्ष शोध, संस्थानम्, आलियाबाद, मं. शमीरपेट, जि.-रंगारेड्डि, तेलंगाना।

तृतीयसत्रम्

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-हो

पंचमपत्रम् - सरलमानकसंस्कृतम्

Code- BSSAAE-305 Credit-2

Course Objective:
The course will be able to,
Equip learners with the ability to engage in basic conversations in Sanskrit on everyday topics, such as greetings, introductions, and common social interactions.
Improve learners' ability to understand spoken Sanskrit in various conversational contexts.
Improve learners' ability to read, write and understand the basic Sanskrit writings.

इकाई प्रथम- भाषा परिचयः वाक्य रचना 1 (6 घण्टे)

संस्कृत भाषा पचियय, स्वपरिचय, सामान्यपदपरिचय (नामपदम्, क्रियापदम्) वर्तमानकाल (प्रथमपुरुष, एकवचनम्, बहुवचनम्, उत्तमपुरुष,द्विवचनम्) संख्या, भविष्यत्कालः, भूतकालः,कालपरिवर्तनम्, समयः, देहाङ्गानि

इकाई द्वितीय- वाक्यरचना 2 (6 घण्टे)

लिङ्गभेदः, विभक्तिभेदः, विशेषणम्, अव्ययम्, बन्धुवाचकाः, दिनचर्या, प्रसङ्ग-वाचनम् (गुरुशिष्यसम्भाषणम्, मित्रसम्भाषणम् आदि)

इकाई तृतीय- कथा-वाचनम् पंचतंत्रम् (6 घण्टे)

अनधिकारचेष्टा, शब्दमात्रान्न भीतव्यम्, उपायेन हि यच्छक्यं न तच्छक्यं पराक्रमैः,
न हि-अविज्ञातशीलस्य प्रदातव्यः प्रतिश्रयः।

इकाई चतुर्थ- संस्कृतलेखनम् 1 (6 घण्टे)

वेदवेदाङ्गानां महत्वम्, मुखं व्याकरणं स्मृतम्, उपनिषदां महत्वम्, भारतं पञ्चमो वेदः, पुराण लक्षणम् तेषां महत्वं च, संस्कृतभाषाया महत्वम्, संस्कृतस्य रक्षार्थं प्रसारार्थं चोपायाः

इकाई पञ्चम- संस्कृतलेखनम् 2 (6 घण्टे)

भारतीयदर्शनानां महत्वं वैशिष्ट्यं च, नास्ति सांख्यसमं ज्ञानम्, एकं सांख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति, नास्ति योगसमं बलम्।

निर्धारितग्रन्थाः

1. संस्कृतस्वाध्यायः-वेम्पटि कुटुम्बशास्त्री, राष्ट्रिसंस्कृतसंस्थानम्, नई दिल्ली
2. पंचतंत्रम्

सन्दर्भग्रन्थाः

1. वाक्यव्यवहारावलिः-श्रीमद्दयानन्दकन्यागुरुकुलम्, चोटीपुर
2. संस्कृतनिबन्धशतकम्, लेखक- डॉ0 कपिल द्विवेदी, प्रकाशन-विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी

Course Outcomes:
After completing the course, students will be able to,

Hold simple dialogues, ask and answer questions, and respond appropriately in social settings using basic Sanskrit vocabulary and sentence structures.

Comprehend and interpret short spoken passages, identify key information, and follow along with basic conversations in Sanskrit.

Write on various topics in simple Sanskrit.

षष्ठपत्रम् - सस्वरवेदपाठः

Code-BSSASE-306 (1) Credit-2

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य-

- वेदों की रक्षा करना।
- वेद, वेदो का विषय और वेदों के ऋषियों से लाभान्वित् होगें।
- वेद पाठ के हर प्रकार के पाठों से अवगत् कराना।
- अक्षरों(वर्णो) उच्चारण का सम्यक बोध कराना।

ईकाई-१

i. वैदिक वाङ्मय परिचय
ii. वेदो के ऋषियों, छन्द एवं देवताओं के स्वरूप का परिचय।
iii. वेदों के मुख्य विषयों का परिचय।
iv. वेद पाठ के आठ प्रकार के पाठों (जटा, माला, शिखा, रेखा, ध्वजा, दण्ड, रथ, घन)से अवगत कराना।
v. मुख्य सूक्तों का परिचय (अग्नि सूक्त, वायु सूक्त, वागाम्भृणी, बृहस्पति, स्वस्तिवाचन, पुरुषसूक्त, नासदीयसूक्त, शान्तिकरण श्रद्धा, संगठन एवं दिनचर्या मन्त्रों का सस्वर उच्चारण)

ईकाई-२

i. ऋग्वेदीय अग्नि सूक्त, वायु सूक्त, वागाम्भृणी सूक्त कण्ठपाठ अभ्यास एवं अर्थ सहित व्याख्या।
ii. पुराने पाठ का आवृत्ति।

ईकाई-३

i. पुरुष सुक्त नासदीय सूक्त, बृहस्पति सूक्त कण्ठपाठ अभ्यास एवं अर्थ सहित व्याख्या।
ii. पुराने पाठ का आवृत्ति।

ईकाई-४

i. कृष्ण युजर्वेदीय तैत्तीरीय आरण्यक मंत्रपुष्पम् का परिचय।
ii. पुराने पाठ का आवृत्ति।
iii. मन्त्रपुष्पम् का पाठ एवं कण्ठस्थ अर्थ सहित व्याख्या।
iv. स्वस्तिवाचन शांतिकरण एवं दिनचर्यामंत्रो का सस्वर उच्चारण।
v. संगठन सूक्त के प्रतिदिन एक-एक मंत्र का अर्थ बोध।

परिणाम-

- वेद पाठ के प्रकारों (पाठों) का बोध होगा।
- अग्नि,वायु, सस्वर, पाठ एवं अर्थ बोध।
- वैदिक वाङ्मय के विषय मे ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- एकाग्रता बढ़ती है, सात्विक हारमोन्स पैदा होने से अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञान का एवं आनन्दमय अस्तित्व पुष्ट एवं प्रसन्न होता है।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक-वैदिक सुक्त मञ्जरी, मुद्रक-ऋषि ऑफसैट प्रिन्टर्स, ज्वालापुर हरिद्वार।

अथवा

षष्ठपत्रम् - Advance Knowledge of Vocal & Instrumental

Code: BSSASE-306 (2) Credit-3

Objective -

- Understand the fundamental concepts of music, including its origins, methods, types, and forms
- Explore the nature of sound, its origin, and the elements of music such as notes, pitches, and rhythm.Learn about concepts like Shruti, Swar, Andolan, Laya, and Taal, including their types and characteristics.Gain knowledge of basic musical notes, scales, and octaves.Practice to Sing five Bhajans.
- Understand the concept of Raag, its rules, classifications, and basic characteristics.Identify the ten Thaats and learn about their significance in Raag classification.Recognize three Raags belonging to each of the ten Thaats.
- Study the lives and contributions of prominent musicians.

Unit I- Basic Theory of Primary Raag (Yaman and Bhairav), Writing Skills of Chota khayal in Teentaal in Raag Yaman, Importance of Taal in Music, Labeled Diagram of Tabla, Biography & Role in Tabla – Pt.Kishan Maharaj, Labeled Diagram of Tanpura, its role & Significance in music.

Unit II- Writing skill of one kaydas & One paltas each in Thah Laya in teentaal, Two Yog Geet .

Unit III- Practice of one Chota Khayal (Bandish) in Teentaal madhya laya with two Taan, Stage /Class Performance of One(Bhajan,Patriotic Song & Ghajal).

Unit IV- **<u>Tabla</u>**:- Bhajan Playing pattern on Tabla, One Palta in Teentaal. Ability to play Teentaal on Lehra .

<u>Harmonium</u> : Playing Skill of **Aroh Avroh Pakad** in Following Raag (Bhopali, Malkaush,Bhairavi), Practice of One (bhajan, Motivational Song), playing skill of Alankar 1 to 10 (According to kramik pustak malika-1)

Outcomes-

5. Students will know what music is, where it comes from, and the different types it can have.
6. Students will understand how sound works and learn about notes, pitches, and how they change in music.They will learn about concepts like Shruti, Swar, Andolan, Laya, and Taal, including their types and characteristics.Students will acquire knowledge of basic musical notes, scales, and octaves, and practice singing five Bhajans.
7. Students will learn about Raag, its rules, and different types, helping them appreciate Indian classical music better.
8. Students will discover the lives of famous musician and understand their importance in music history.

Recommended Books:-

1. Sangeet Rachna Ratnakar Part – 1- Rajkishor Prasad Sinha (Author)
2. Raag parichaya Part – 1 to 4 – Harishchandra Srivastava (Author)
3. Sangeet Prasnottar Part – 1
4. Taal Parichaya – All parts – Acharya Girish Chandra Shrivastava (Author)
5. Adarsh Table Prashnotari Part – 1 – Dr. Rubi Shrivastava
6. Sangeet Praveshika – Acharya Girish Chandra Shrivastava (Author)
7. Kramik Pushtak Mallika Part – All Parts – V.N. Bhatkhande
8. Bhartiya Sangeet Itihas – Umesh & Jaydev Joshi
9. Sangeet Vadya – Ragmani

अथवा

षष्ठपत्रम्- यज्ञविज्ञानम्

Code- BSSASE-306 (3) Credit-3

उद्देश्यः-

- यज्ञ के स्वरूप एवं उसके ऐतिहासिक तथ्यों से अवगत कराना।
- यज्ञ के व्यावहारिक वैज्ञानिक एवं परमार्थिक पक्षों का ज्ञान कराना।
- यज्ञ के महत्व का बोध कराना।

इकाई 1- यज्ञ शब्द का परिचय (निर्वचन व परिभाषा), शास्त्रीय प्रमाण व महत्व आदि। 9 घण्टे

इकाई 2-यज्ञ के प्रकार, पञ्चमहायज्ञों का परिचय , देवयज्ञ, ब्रह्मयज्ञादि के मन्त्रों की व्याख्या, यज्ञ सामग्री, समिधा आदि का परिचय। 9 घण्टे

इकाई 3- शास्त्रों में वर्णित यज्ञ के अन्य प्रकार व महत्व, यज्ञ का व्यवहारिक पक्ष । 9 घण्टे

इकाई 4-यज्ञ का वैज्ञानिक विश्लेषण, यज्ञचिकित्सा शोध कार्य ग्लोवल वार्मिंग समस्या का समाधान। 9 घण्टे

इकाई 5-यज्ञ का रोगों पर प्रभाव, यज्ञ एवं योग का प्रभाव। 9 घण्टे

परिणामः-

- यज्ञ से सामान्य रूप से रोगों के निदान में समर्थता प्राप्त होगी।
- यज्ञ एवं योग को समग्र चिकित्सा के रूप में उपयोग एवं विनियोग करने में कुशल होगें।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक-ः

श्रौत यज्ञों का संक्षिप्त परिचय। लेखक-पं. युधिष्ठिर मीमांसक

यज्ञ योग आयुर्वेद चिकित्सा। लेखक-प.पू.स्वामी रामदेव जी महाराज प्रकाशन-दिव्ययोग प्रकाशन।

बी. ए. संस्कृतं चतुर्थसत्रम्

पूर्णाङ्काः–100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः–75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः–25
समयः–होरात्रयम्

प्रथमपत्रम्– छान्दोग्योपनिषन्नीतिशतककाव्यदीपिकाः (4–6)

Code - BSSAMJ-401, Credit-5

उद्देश्य-

- भर्तृहरि विरचित नीतिशतकम् के द्वारा ईश नमस्कार, वैराग्योक्ति तथा विद्वान देव व कर्म की प्रशंसा का बोध कराना ।

परिणाम-

- नीतिशतक के ज्ञान से विद्यार्थी जीवन की बाधाओं एवं उनके निराकरण के मार्ग के ज्ञान से व्यवहार में समग्रता आती है।

इकाई–1 उपनिषद्– नारदसनत्कुमारयोः संवादः (छान्दोग्योपनिषद्)

नारदस्य सनत्कुमारं प्रति गमनम्, तत्त्वज्ञानस्येच्छा, नारदस्य पठितविषयः, ब्रह्मस्योपासना करणीय ।

इकाई–2 नीतिशतकम् (1–50)

वैराग्योक्तिः, विद्वान् प्रशंसा, दैवप्रशंसा, कर्मप्रशंसा इत्यादयः ।

इकाई–3 नीतिशतकम् (51– समाप्ति पर्यन्त)

सर्वत्र निजमनोरथो न प्रकाशनीयः, दुर्जनस्य सर्वदूषकत्वम्, सेवाया अतिदुष्करत्वम्, ग्राह्य–अग्राह्यविवेकार्थं गुणागुणप्रणालिका, सज्जनानां स्वभावसिद्धगुणाः, सत्सङ्गतेः प्रशंसा इत्यादयः।

इकाई–4 काव्यदीपिका

चतुर्थशिखा–पञ्चसन्धिः, पञ्चमशिखा–काव्यगतदोषाः

इकाई–5 काव्यदीपिका

षष्ठशिखा–गुणत्रयः, सप्तमशिखा–रीतिः

पाठ्यपुस्तकम्

1. **नीतिशतकम्** – चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी ।
2. **काव्यदीपिका**– विद्यारत्नकान्तिचन्द्रभट्टाचार्येण संगृहीता ।

प्रकाशकः– चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी ।

द्वितीयपत्रम - योगदर्शनतर्कसंग्रहसांख्यदर्शनम्
Code- BSSAMJ-402, Credit-5

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य-

- महर्षि पतंजलि विरचित योग दर्शन द्वारा योग, योग के लक्षण, क्लिष्टाक्लिष्ट वृत्ति इत्यादि विषयों का बोध कराना ।
- सात श्रीमदन्नम्भट्ट विरचित तर्कसंग्रह में वर्तमान सात पदार्थ, नौ द्रव्य, चौबिस गुण तथा पांच कर्मो के लक्षण व गुण का विस्तृत ज्ञान कराना ।
- महर्षिकपिल विरचित सांख्यदर्शन में विद्यमान त्रिविधदु:ख के निरोध के उपाय, सृष्टिचक्र, प्रमाण, ईश्वर व आत्मा के स्वरूप का बोध कराना ।

परिणाम-

- योगदर्शन के भाष्य सहित ज्ञान होने से विद्यार्थी ये सोच-विचार कर सकता है कि मेरी चेतना का धरातल क्या है और मैं इस समय कौन-सी स्थिति में हूं, इसे जानने से विद्यार्थी जीवन में उन्नति के सोपान को प्राप्त करता है।
- वैशेषिक के मूल तत्वों से अवगत होकर वैशेषिक के गम्भीर अध्ययन में प्रवृत्त हो जाता है।
- सांख्यदर्शन के बोध से विद्यार्थी दु:ख, दु:खोपाय, सृष्टिचक्र आदि से अगवत होकर अपने व सामाजिक क्षेत्र में उनके निवारण में अपनी भूमिका का निर्वहन करता है।

इकाई-1 योगदर्शनम् (प्रथमपाद: व्यासभाष्यसहितम्) (1-25)
योगस्य स्वरूपम्, क्लिष्टाक्लिष्टवृत्तयः, द्रष्टु: स्वरूपम्, अभ्यास-वैराग्य, सम्प्रज्ञातासम्प्रज्ञातलक्षणम् , ईश्वरस्य लक्षणम् ।

इकाई-2 योगदर्शनम् (प्रथमपाद: व्यासभाष्यसहितम) (25- समाप्तिपर्यन्तम्)
ईश्वरस्य स्वरूपम् , नवान्तरायाः, चित्तप्रसादस्य साधनानि, ईश्वप्राप्तेरुपाय: सम्प्रज्ञातासम्प्रज्ञातस्वरूप

इकाई-3 तर्कसंग्रह: (उद्देश्य, लक्षण, गुणनिरूपण)

इकाई-4 सांख्यदर्शनम् (प्रथमाध्यायस्य 1-50 सूत्राणि)
त्रिविधानां दु:खानां निरोधोपायः, सृष्टिचक्रस्य, प्रत्यक्षादि: प्रमाण:

इकाई-5 सांख्यदर्शनम् (प्रथमाध्यायस्य 51- समाप्तिपर्यन्तम्)
ईश्वरस्य सिद्ध्यासिद्धिविषयः, सदसत्कारवादः, आत्मन:स्वरूपम् ।

पाठ्यपुस्तकम्

1. **योगदर्शन** (व्यासभाष्य सहित) सुरेन्द्र चन्द्र श्रीवास्तव
   प्रकाशक:- चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी ।
2. **तर्कसंग्रह:** (अन्नंभट्ट)
   प्रकाशक:- चौखम्भा सुभारती प्रकाशन
3. **सांख्यदर्शनम्** (विज्ञानभिक्षु भाष्य सहित)
   प्रकाशक:- चौखम्भा प्रकाशन, पोस्ट बाक्स नं. 1150 के. 37/116, गोपाल लेन, वाराणसी 221001

सहायकग्रन्थः- षड्दर्शनम्- स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती,
प्रकाशक - विजय कुमार गोविन्दराम हासानन्द, नई दिल्ली।

तृतीयपत्रम्- सूक्तानि, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका च

Code - BSSAMJ-403, Credit-6

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य-

- यास्क मुनि विरचित निरुक्त में विद्यमान आचार्यादि शब्दों के निर्वचन का ज्ञान कराना ।
- वेदो में उल्लेखित विशिष्ट सूक्तों एवं मन्त्रों का पद पदार्थ निरूपण पूर्वक बोध कराना ।
- महर्षि दयानन्द विरचित ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के सृष्टि-उत्पत्ति विषय और वेदसंज्ञा विचार विषयों का ज्ञान कराना ।

परिणाम-

- आचार्य आदि शब्दों के निर्वचन के ज्ञान से विद्यार्थी के मन-मस्तिष्क में शब्द-शक्ति विचार करने का सामर्थ्य एवं शब्द के निर्वचन पूर्वक अर्थबोध में निपुण हो जाता है।
- संगठन आदि सूक्त के अर्थपूर्वक बोध से संगठन की रचना व संचालन में विशेष निपुणता आती है।
- सृष्टि उत्पन्न आदि विषय बोध से विद्यार्थी जीवन में उत्पन्न होने वाले संकट का सामना करने को तत्पर रहता है तथा समाज में व्याप्त सृष्टि उत्पत्ति विषयक विभिन्न भ्रान्तियों के निवारण में समर्थ हो जाता है।

इकाई-1 निर्वचनम्

आचार्य, वीर, ह्रद, गो, समुद्र, वृत्र, आदित्य, उषस्, मेघ, वाक् उदक्, नदी, अश्व, अग्नि, जातवेदस्, वैश्वानर, निघण्टु ।

इकाई-2 मन्त्राः- ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना-मन्त्राः, जागरणमन्त्राः, शयनमन्त्राः, भोजनमन्त्रः, स्नानमन्त्रः, यज्ञोपवीतमन्त्रः, गायत्रीमन्त्रः, महामृत्युमहामन्त्रः

(क) अर्थबोधः, (ख) कण्ठस्थीकरणम्

इकाई-3 सूक्तम्- संगठनसूक्तम्, श्रद्धासूक्तम्, मेधासूक्तम्

(क) अर्थबोधः, (ख) कण्ठस्थीकरणम

इकाई-4 ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका-

सृष्टि-उत्पत्तिविषयः

इकाई-5 ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका-

वेद संज्ञाविचारविषयः

पाठ्यपुस्तकम्

1. **निरुक्त**- यास्क आचार्य
   प्रकाशकः-हरयाणा साहित्य संस्थान गुरुकुल झज्जर (हरयाणा)।
2. **वैदिक नित्यकर्म विधि**- स्वामी रामदेवः, **प्रकाशकः-दिव्य प्रकाशन पतंजलि योगपीठ हरिद्वार ।**
3. **ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका**- श्रीमत्स्वामिदयानन्दसरस्वती
   प्रकाशकः- (क) आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट (ख) रामलाल कपूर ट्रस्ट

सहायकग्रन्थः-निरुक्त-श्री मुकुन्द झा शर्मा, **प्रकाशकः**- चौखम्भा, संस्कृत प्रतिष्ठान दिल्ली

निघण्टु तथा निरुक्त - लक्ष्मणस्वरूप (हिन्दी भाष्य-सत्यभूषण योगी, शशि कुमार) मोतिलाल बनारसीदास, दिल्ली

चतुर्थपत्रम्- स्त्रीप्रत्ययतद्धितप्रत्ययप्रकरणप्रौढरचनानुवादकौमुद्यः

Code - BSSAMN-404, Credit-4

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य-

- वरदराजाचार्यप्रणीत लघुसिद्धान्तकौमुदी के माध्यम से सन्धियों का ज्ञान कराना, एवं कारक प्रकरण का विस्तृत ज्ञान कराना।
- व्याकरण चन्द्रोदय नामक ग्रन्थ से स्त्रीप्रत्यय व तद्धितप्रत्ययों का बोध कराना ।
- पाणिनीय अष्टाध्यायी में वर्णित पारिभाषिक संज्ञाओं का बोध कराना।

परिणाम-

- व्याकरण शास्त्र में प्रयुक्त होने वाली विभिन्न संज्ञाओं को समझने से अन्य शास्त्रों में छात्र/छात्राएं उन्नत गति प्राप्त करने में समर्थ हो जाते हैं।
- तद्धित प्रत्ययों के बोध से विद्यार्थी संस्कृत वाङ्मय के विभिन्न शास्त्रों में त्वरित गति प्राप्त करता है।

इकाई-1 स्त्रीप्रत्ययप्रकरणम्-

प्रत्ययः-टाप्, डाप्, चाप्, ङीप्, ङीष्, ङीन् ऊङ्।

इकाई-2 तद्धितप्रत्ययप्रकरणम् (अपत्यार्थ, मत्वर्थीयाः, भाव)

अण्, इञ, यञ् इत्यादयः। मतुप्, इनि, ठन् इत्यादयः । त्व, तल्, ष्यञ् इत्यादयः।

इकाई-3 कर्त्तरि प्रयोगः, कर्मणि प्रयोगः, भावे प्रयोगः

अव्ययार्थः- श्रीमत्महर्षिदयानन्दसरस्वतिकृत्।

इकाई-4 प्रौढरचनानुवादकौमुदी अभ्यास 1-15

इकाई-5 प्रौढरचनानुवादकौमुदी अभ्यास 16-30

पाठ्यपुस्तकम्

1. **लघुसिद्धान्तकौमुदी**
1. **अव्ययार्थः**- श्रीमत्महर्षिदयानन्दसरस्वतिकृत्।
4. **प्रौढरचनानुवादकौमुदी** - डॉ. कपिलदेव द्विवेदी
   प्रकाशकः-विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी ।

चतुर्थसत्रम्

पंचमपत्रम्-Communication Technology

Code-BSSAAE-405 (1) Credit-2

Objectives

The course helps the participants to,

- Understand the concept and purpose of Communication Technology
- Communicate with email by their own
- Join and organize online academic events
- Search the contents through Google and so
- Access various E-Resources to develop intelligence

Unit I	Introduction to Communication technology Definition, Types, Purpose and Input methods for Indian Languages/Scripts	(10 hours)
Unit II	Email Communication Gmail and Zimbra – How to create and use	(4 hours)
Unit III	Web Conference and Tools Google Meet, Google Classroom, Zoom – including live streaming	(6 hours)
Unit IV	Internet Search Google, YouTube, Blog	(10 hours)
Unit IV	E-Resources E-Dictionaries, E-Books, E-Learning, Wiki for Indian Languages	(10 hours)

Outcomes

After completing the course, the learners will be able to

- Type Indian Script/s by using variousInput methods
- Send and arrange emails
- Schedule and/or Join web conferences
- Search the contents through Google and so
- Access various E-Resources

अथवा

पंचमपत्रम्- Introduction to Journalism & Mass Communication

Code-BSSAAE-405 (2) Credit-2

पूर्णाङ्काः-50
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-35
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-15
समयः-होरात्रयम्

Course Objectives

- To introduce students to the concepts, processes, and importance of journalism and mass communication.
- To explore the historical evolution and functions of media in society.
- To familiarize students with communication models and theories.
- To develop an understanding of media ethics and laws.
- To provide practical insights into basic content creation for media platforms.

Course Outcomes (COs)

By the end of this course, students will be able to:

- CO1: Describe the basic concepts and processes of communication.
- CO2: Identify the historical development and role of journalism in society.
- CO3: Analyse various models and theories of communication.
- CO4: Examine the ethical and legal frameworks of media practices.
- CO5: Demonstrate basic skills in content creation and media platform usage.

Unit	Course Outline	CO Mapping	Bloom's Taxonomy Level
1	**Basics of Communication (6 Hours)** : Definition, Elements, and Process of Communication; Ancient Indian concept of communication –oral tradition, use of cave art, bhoja-patras, rock edicts and pillars for communication, samvad, story-telling, folk, drama, art of communication in Natyashastra, sadharanikaran. Types of Communication: Intrapersonal, Interpersonal, Group, Mass Communication; Functions of Communication: Informing, Persuading, Entertaining; Barriers to Communication	**CO1,CO3**	**K1, K4**
2	**Introduction to Journalism (6 Hours):** Definition, Scope, and Importance of Journalism; Historical Overview of Journalism in India; Principles of Journalism: Accuracy, Objectivity, Fairness; Role of Journalism in Democracy	**CO2**	**K2**
3	**Mass Communication (6 Hours):** Definition and Characteristics of Mass Media; Types of Mass Media: Print, Broadcast, Digital; Media Convergence and New Media Technologies; Social, Cultural, and Political Impact of Media	**CO2,CO3**	**K2, K4**
4	**Media Ethics and Laws (6 Hours):** Introduction to Media Laws: Defamation, Copyright, Contempt of Court; Ethical Challenges in Journalism and Media; Freedom of Press in India; Media Literacy and Responsible Journalism	**CO4**	**K3, K5**
5	**Hands-on Learning Insights (6 Hours):** Basics of News Writing: 5Ws and 1H; Crafting Headlines and Leads; Introduction to Digital Media Platforms:	**CO5**	**K3, K6**

	Blogging, Podcasting, Social Media; Group Discussions on Emerging Media Trends		
Bloom's Taxonomy Level: K1-Remember, K2- Understand, K3- Applying, K4- Analyze, K5- Evaluate, K6-Create			

Assignments:

Assignment 1: Write a report on the role of journalism in democracy, with examples from Indian and global media practices. (500 words)

Assignment 2: Create a blog post on an emerging trend in digital media, such as podcasting or citizen journalism. (500 words)

Suggestive Readings:

- Baran, S. J. (2020). Introduction to Mass Communication: Media Literacy and Culture (10th ed.). McGraw-Hill Education.
- Dominick, J. R. (2012). The Dynamics of Mass Communication: Media in the Digital Age (12th ed.). McGraw-Hill.
- Kumar, K. J. (2020). Mass Communication in India (5th ed.). Jaico Publishing House.
- McQuail, D. (2010). McQuail's Mass Communication Theory (6th ed.). Sage Publications.
- Natarajan, J. (1955). History of Indian Journalism. Publications Division, Ministry of Information and Broadcasting, India.
- Ravindran, R. K. (1999). Handbook of Radio, Television, and Broadcast Journalism. Anmol Publications.
- पांडे, स. के. (2018). जनसंचार और पत्रकारिता का परिचय. वाराणसी: भारतीय विद्या भवन पब्लिकेशन।
- गुप्ता, एस. (2020). जनसंचार माध्यम और सिद्धांत. दिल्ली: समीर प्रकाशन।
- शर्मा, विकास. (2019). पत्रकारिता के सिद्धांत और व्यवहार. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
- त्रिपाठी, राकेश कुमार. (2016). समाचार लेखन और संपादन. दिल्ली: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
- प्रसाद, महेंद्र (2015). भारतीय पत्रकारिता का इतिहास. पटना: प्राची प्रकाशन।
- मिश्रा, उमेश. (2021). जनसंचार माध्यमों की भूमिका. भोपाल: साहित्य प्रकाशन।
  द्विवेदी, रामेश्वर. (2017). पत्रकारिता और लोकतंत्र. लखनऊ: लोकोदय प्रकाशन।

बी. ए. संस्कृतं पञ्चमसत्रम्

प्रथमपत्रम्- अलङ्कारछन्दःकविपरिचयाः

Code - BSSAMJ-501, Credit-5

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य-

- श्री कान्तिचन्द्र भट्टाचार्य विरचित काव्यदीपिका में वर्णित शब्दालंकार व अर्थालंकारों का बोध कराना ।
- केदार भट्ट विरचित वृत्तरत्नाकर मे उल्लेखित अनुष्टुपादि छन्दों का परिचय कराना ।
- संस्कृत भाषा के विभिन्न कवियों के व्यक्तित्व व कृतित्व का परिचय कराना ।

परिणाम-

- अलङ्कार आदि के बोध से विद्यार्थी साहित्य सृजन करने में सक्षम होता है।
- विभिन्न छन्द को जानने से विद्यार्थी श्लोक रचना करने में सक्षम होता है।
- अन्य शास्त्रों में श्लोकों को देखकर छन्दबोधन में समर्थ हो जाता है।
- विभिन्न कवियों के व्यक्तित्व एवं उनकी रचना से विद्यार्थी, जीवन के विभिन्न आयामों को सरलता से समझता है।

इकाई-1 अलङ्कारः-

अनुप्रास, यमक, उपमा, श्लेष, रूपक, उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यास, स्वभावोक्ति, निदर्शना, विरोधाभास ।

इकाई-2 छन्दः

अनुष्टुप, आर्या, उपजाति, वसन्ततिलका, मालिनी, शिखरिणी, मन्दाक्रान्ता, द्रुतविलम्बित, तोटक, शार्दूलविक्रीडितम् ।

इकाई-3 कविपरिचयः- (व्यक्तित्वं कृतित्वं च)

बाल्मीकि, भास, अश्वघोष, कालिदास

इकाई-4 कविपरिचयः- (व्यक्तित्वं कृतित्वं च)

शूद्रक, विशाखदत्त, भारवि, माघ

इकाई-5 कविपरिचयः- (व्यक्तित्वं कृतित्वं च)

बाणभट्ट, दण्डी, भवभूति, श्री हर्ष

पाठ्यपुस्तकम्

1. **काव्यदीपिका**- विद्यारत्नकान्तिचन्द्रभट्टाचार्येण संगृहीता ।
   प्रकाशकः- चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी ।
2. **छन्दः**- वृत्तरत्नाकर (केदार भट्ट)
   प्रकाशकः- चौखम्भा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी ।

सहायकग्रन्थः- छन्दः- वृत्तरत्नाकर (केदार भट्ट), व्याख्याकार- श्री धरानन्द शास्त्री
प्रकाशकः- मोतीलाल बनारसीदास ।

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

द्वितीयपत्रम्- नाट्यशास्त्रम्, (2 ,6 ,7), काव्यप्रकाशः (8)
Code- BSSAMJ-502, Credit-4

उद्देश्य-

- नाट्यशास्त्र एक प्राचीन भारतीय ग्रंथ है जो रंगमंच, नृत्य और संगीत सहित नाट्य कला के विभिन्न पहलुओं का [illegible]
- कथावस्तु में उचित शुरूआत, विकास, उत्कर्ष और अंत होना चाहिए।
- कथावस्तु में संघर्ष, द्वेष, प्रेम और अन्य मानवीय भावाओं को चित्रित किया जाना चाहिए।
- काव्यप्रकाश, जिसे मम्मट द्वारा रचित संस्कृत साहित्यशास्त्र का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ माना जाता है। काव्य की पराख और मूल्यांकन के लिए एक विस्तृत और प्रामाणिक मार्गदर्शिका है।

परिणाम-

- यह भरत मुनि द्वारा रचित माना जाता है और इसमें नाट्य रचना, अभिनय, रस, छंद, अलंकार और संगीत सहित कई विषयों पर चर्चा की गई है।
- नाट्यशास्त्र में कथावस्तु (कथनक) को नाटक का एक महत्वपूर्ण तत्व माना गया है।
- नाट्यशास्त्र में, कथावस्तु को रस के अनुसार ढालने की बात कही गई है।
- काव्य प्रकाश नामक यह ग्रंथ काव्य के विभिन्न तत्वों जैसे रस, अलंकार, गुण, दोष, आदि का विस्तृत विवेचन करता है।

इकाई-1 नाट्यशास्त्रम् अध्याय-2 (श्लोक 1-50)

नाट्यमण्डपलक्षणम्, मानवगृहलक्षणम्, प्रेक्षागृहस्य प्रकारत्रयम् ।

क) कविपरिचयः (ख) काव्यगतविशेषताः।

इकाई-2 नाट्यशास्त्रम् अध्याय-2 (श्लोक 51 - समाप्ति पर्यन्त)

रङ्गपीठ एवं रङ्गशीर्ष वर्णनम्, चित्रकर्मविधानम्, चतुरस्रगृहलक्षणम्

क) कविपरिचयः (ख) काव्यगतविशेषताः।

इकाई-3 नाट्यशास्त्रम् अध्याय-6

रसलक्षणम्, रसभेदः - श्रृङ्गाररसः, हास्यरसः, करूणरसः, रौद्ररसः, वीररसः, भयानकरसः, बीभत्सरसः, अद्भुतरसः, शान्तरसविचारः।

क) कविपरिचयः (ख) काव्यगतविशेषताः।

इकाई-4 नाट्यशास्त्रम् अध्याय-7

विभावानुभावव्यभिचारीभावानाम् लक्षणम्, स्थायीभावानाम् प्रकारः, रतिः, हासः, शोकः, क्रोधः, उत्साहः, भयः, जुगुप्सा, विस्मयः।

क) कविपरिचयः (ख) काव्यगतविशेषताः।

इकाई-5 काव्यप्रकाशः अष्टम उल्लासः

गुणप्रकारनिरूपणम्, माधुर्यः ओजः प्रसादः इति गुणत्रयम्

क) कविपरिचयः (ख) काव्यगतविशेषताः।

पाठ्यपुस्तकम् - 1. नाट्यशास्त्रम् - सम्पादक डॉ. परसनाथद्विवेदी
प्रकाशकः- सम्पूर्णनन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयः वाराणसी

2. काव्यप्रकाशः - सम्पादक-डॉ. सत्यव्रत सिंह
प्रकाशक : - चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

तृतीयपत्रम्- न्यायदर्शनवैशेषिकदर्शनवेदान्तदर्शन-वेदान्तसारचारवाकदर्शनजैनदर्शनबौद्धदर्शनानि

Code- BSSAMJ-503, Credit-5

उद्देश्य-

- महर्षि गौतम प्रणीत न्यायदर्शन के माध्यम से षोडश पदार्थों व उनकी सामान्य व्याख्या का बोध कराना।
- महर्षि कणाद द्वारा विरचित वैशेषिक दर्शन की सहायता से धर्म की परिभाषा तथा लक्षण सहित षड्पदार्थों व द्रव्यगुण कर्मों का बोध कराना ।
- महर्षि वेदव्यास द्वारा लिखित वेदान्त दर्शन में ब्रह्म का स्वरूप, जगत् का निमित्त कारण ब्रह्म की व्याख्या का बोध कराना ।

परिणाम-

- षोडश पदार्थ, अपवर्ग आदि के अध्ययन से विद्यार्थी की बुद्धि का सूक्ष्मीकरण होता है अतः जीवन की विराटता को समझकर अपने जीवन को उन्नत बनाता है।
- धर्म आदि के बोध से विद्यार्थी जीवन में द्रव्य, गुण, कर्म आदि जानकर उसके बोधन में समर्थ्य हो जाता है।
- वेदान्त के अध्ययन से सृष्टि उत्पत्ति, निमित कारण आदि शङ्काओं का समाधान होता है।
- तद्धित प्रत्ययों के बोध से विद्यार्थी संस्कृत वाङ्मय के विभिन्न शास्त्रों को सुगमता से समझता है ।

इकाई-1 न्यायदर्शनम् (प्रथमाध्यायः)

षोडशपदार्थनिरूपणं, अपवर्गस्य प्राप्तिः, पदार्थानां सामान्यपरिचयः।

इकाई-2 वैशेषिकदर्शनम् (प्रथमाध्यायः)

धर्मस्य परिभाषा, षड्पदार्थानां निरूपणं, द्रव्यगुणकर्मणां लक्षणसहितं निरूपणम् इत्यादयः ।

इकाई-3 वेदान्तदर्शनम् (प्रथमाध्यायस्य प्रथमपादः)

ब्रह्मणः स्वरूपं, ब्रह्म जगतः निमित्तकारणम्, आकाश प्राण ज्योति इत्यादिभिः शब्दैः ब्रह्मणः व्याख्याः

इकाई-4 वेदान्तसारः (आचार्यसदानन्दरचितः)

इकाई-5 चार्वाकदर्शनम्, जैनदर्शनम्, बौद्धदर्शनम्

पाठ्यपुस्तकम्

1. **न्यायदर्शनम्**- महर्षि गौतम
   प्रकाशकः-चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
2. **वैशेषिकदर्शनम्**- महर्षि कणाद
   प्रकाशकः-चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
3. **वेदान्तदर्शनम्**- महर्षि वेदव्यास
   प्रकाशकः-चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
4. **वेदान्तसारः (आचार्यसदानन्दरचितः)**
5. **सर्वदर्शनसंग्रह**- माधवाचार्यकृत, प्रो. उमाशंकर शर्मा

चतुर्थपत्रम्- नामिकाख्यातिकौ

Code- BSSAMN-504, Credit-4

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

उद्देश्य-

- महर्षि दयानन्द कृत, नामिक नामक पुस्तक से अकारान्त, इकारान्त हलन्तादि शब्दरूपों की सिद्धि का ज्ञान कराना।
- आख्यातिक नामक पुस्तक से भ्वादिगण स्थित धातुओं की सिद्धि व सूत्रार्थादि का बोध कराना।

परिणाम-

- संस्कृत भाषा में प्रयुक्त होने वाले सभी सुबन्तपदों का बोध हो जाता है। जिससे भाषा को बोलने, लिखने और पढ़ने में सरलता हो जाती है।
- नामिक अध्ययनपूर्वक विद्यार्थी अथाह शब्द राशि का प्रयोग वाक्व्यवहार एवं संस्कृत संभाषण में करता है।
- आख्यातिक अध्ययन से विभिन्न धातु रूपों का बोधपूर्वक प्रयोग कर विद्यार्थी भाषण में कुशलता को प्राप्त करता है।
- विभिन्न धातुरूपों एवं शब्दरूपों के प्रयोग से विद्यार्थी अपनी भाषा के लालित्य एवं माधुर्य को बढ़ाता है।

इकाई-1 नामिकः (अकारान्तविषयात्- इकारान्तविषयपर्यन्तम्)

पुरुषः, शिवः, कृष्णः धनम् वस्त्रम् इत्यादयः शब्दाः । अग्नि, वारि इत्यादयः शब्दाः ।

इकाई-2 नामिकः (ईकारान्तविषयपर्यन्तम्- तकारान्तविषयपर्यन्तम्)

सेनानी, ग्रामणी इत्यादयः शब्दाः । मरुत्, हरित् इत्यादयः शब्दाः ।

इकाई-3 आख्यातिकः (भू-सत्तायाम्- पिठ-हिंसासंक्लेशनयोः)

इकाई-4 आख्यातिकः (शठ-कैतवे च- लूष,रूष भूषायाम्)

इकाई-5 आख्यातिकः (षूङ् प्रसवे- टुओश्वि गतिवृद्ध्योः)

पाठ्यपुस्तकम्

1. **नामिकः**- श्रीमत्स्वामिदयानन्दसरस्वती

   प्रकाशकः-वैदिक पुस्तकालय, दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर ।

2. **आख्यातिकः**- श्रीमत्स्वामिदयानन्दसरस्वती

   प्रकाशकः-वैदिक पुस्तकालय, दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर ।

पञ्चमसत्रम्

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

चतुर्थपत्रम् -Yog Ayurved & Naturopathy (Internship)
Code-BSSASE-505 Credit-4

उद्देश्य :

- भारतीय पुरातन चिकित्सा पद्धति के समन्वित स्वरूप का बोध कराना ।
- समन्वित चिकित्सा पद्धति के व्यवहारिक एवं प्रयोगात्मक अभ्यास द्वारा साध्य एवं असाध्य रोगो का निदान।
- योग, आयुर्वेद, पञ्चकर्म, षट्कर्म, नेचुरोपैथी, आहार चिकित्सा, यज्ञचिकित्सा, एक्यूपंचर, एक्यूप्रेशर एवं फिजियो थैरेपी जैसे समन्वित भारतीय पुरातन चिकित्सा पद्धतियों के सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक बोध द्वारा योग्य एवं प्रशिक्षित व्यक्तित्व का निर्माण करना।

परिणाम :

- समन्वित चिकित्सा पद्धति में प्रशिक्षित विद्यार्थी समाज में साध्य-असाध्य रोगों से पीडित रोगियों को उपचार देकर उन्हें सम्पूर्ण आरोग्य का लाभ प्रदान करता है एवं भारतीय पुरातन चिकित्सा व्यवस्था के प्रचार प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है ।
- सेवानिष्ठ आजीविका का आलम्बन लेकर स्वयं आत्मनिर्भर होता हुआ अन्यों को भी रोजगार परक सेवा क्षेत्र में नियोजित करता है, उपकार परख उपचार की एक स्वस्थ परम्परा का संवाहक बनकर समाज को शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य के मार्ग पर अग्रसर करता है ।

प्रथम इकाई- पञ्चकर्म- परिचय, प्रकार एवं विभिन्न रोगों में उपचार
(1) वमन (2) विरेचन (3) नस्य (4) बस्ति (5) रक्तमोक्षण
अभ्यंग, शिरोधारा, आंतरिक बस्ति, बाह्य बस्ति, अक्षितर्पण, नस्य, रक्तमोक्षण श्रृंगी, वातमोक्षण, स्नेहन, स्वेदन।

द्वितीय इकाई- षट्कर्म-परिचय, प्रकार एवं विभिन्न रोगों में उपचार
(1) जलनेति (2) रबरनेति (3) कुंजल क्रिया (4) त्राटक (5) शंखप्रक्षालन

तृतीय इकाई- एक्यूप्रेशर
1) परिचय, रोगानुसार, चिकित्सीय लाभ
2) हस्त एवं पैर के विभिन्न मर्म स्थानों के द्वारा चिकित्सा

चतुर्थ इकाई- प्राकृतिक चिकित्सा-सामान्य परिचय एवं रोगानुसार चिकित्सीय लाभ
(1) मिट्टी चिकित्सा (2) जल चिकित्सा (3) सूर्य चिकित्सा (4) आहार चिकित्सा
(5) आकाश चिकित्सा (उपवास) (6) प्राण चिकित्सा (वायु)

पाठ्यपुस्तकम्-

उपचार पद्धति, प्रकाशन- द्विव्य प्रकाशन, द्विव्य योग मन्दिर ट्रस्ट, हरिद्वार।

बी. ए. संस्कृतं षष्ठसत्रम्

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

प्रथमपत्रम्- उत्तररामचरितवाल्मीकिरामायणकिरातार्जुनीयम्

Code- BSSAMJ-601, Credit-5

उद्देश्य :

- उत्तररामचरितम् की कथावस्तु रामायण के उत्तराकांड पर आधारित है, जिसमें राम के वनवास के बाद के जीवन, राज्याभिषेक, सीता का परित्याग और लव कुश के जन्म की कहानी है। यह नाटक मुख्य रूप से सीता के परित्याग और राम की मानसिक वेदना पर केंद्रित है।
- उत्तररामचरितम् में करूण रस का प्रधान रूप से प्रदर्शन किया गया है जो राम की वेदना और सीता के त्याग को दर्शाता है।
- किरातार्जुनीयम् महाकवि भारवि द्वारा रचित एक संस्कृत महाकाव्य है, जिसकी कथावस्तु महाभारत से ली गई है।

परिणाम :

- भवभूति ने इस नाटक में अपनी नाट्य कला का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है, जिसमें पात्रों के चरित्र चित्रण, संवाद और दृश्यों का सुंदर संयोजन है।
- उत्तररामचरितम् में करूण रस का प्रधान रूप से प्रदर्शन किया गया है जो राम की वेदना और सीता के त्याग को दर्शाता है।
- किरातार्जुनीयम् यह मुख्य रूप से अर्जुन द्वारा किरातवेशधारी शिव से पाशुपत अस्त्र प्राप्त करने की कहानी है। जो महाभारत में वन पर्व में वार्णत है।

इकाई-1 **उत्तररामचरितम्** - प्रथम अंक

राज्याभिषेक-विषयक-कथा, रामसीतयोः कथानकम्, रामस्य कर्तव्यपारायणता

(क) कविपरिचयः (ख) पद्यव्याख्या (ग) कथासारः / काव्यगतविशेषताः।

इकाई-2 **वाल्मीकिरामायणम्** - द्वितीय अंक

बालकाण्डं चयनितश्लोकाः - आदर्श पुरूष के गुण, राजनैतिक, पारिवारिक, सामाजिक, राजव्यवस्था, समाज व्यवस्था।

इकाई-3 **किरातार्जुनीयम्** - प्रथमसर्ग (श्लोक 1-46)

युधिष्ठिरं प्रति वनेचरस्य उक्तिः, दुर्योधनस्य प्रशंसा

क) कविपरिचयः (ख) पद्यव्याख्या (ग) कथासारः / काव्यगतविशेषताः।

इकाई-4 **किरातार्जुनीयम्** - द्वितीयसर्ग (श्लोक 1-59)

युधिष्ठिरं प्रति द्रौपद्या उक्तिः, द्रौपद्या आक्रोशकथनम्

क) कविपरिचयः (ख) पद्यव्याख्या (ग) कथासारः / काव्यगतविशेषताः।

इकाई-5 वाल्मीकिरामायणम् सुन्दरकाण्डम् पंचदशसर्गः

राक्षसीभयदर्शनम्, सीतायाः भयादि स्वरूपवर्णनम्

क) कविपरिचयः (ख) पद्यव्याख्या (ग) कथासारः / काव्यगतविशेषताः।

पाठ्यपुस्तकम् -

1. **उत्तररामचरितम्** - प्रकाशकः-चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
2. **किरातार्जुनीयम्** - प्रकाशकः-चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
3. **वाल्मीकिरामायणम्** - प्रकाशकः-चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी

द्वितीयपत्रम्- कौटिल्यार्थशास्त्रनैषधीयचरितशिशुपालवधम्

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

Code- BSSAMJ-602, Credit-5

उद्देश्य :

- वेदत्रवी, वृद्धव्यवहार व इन्द्रियजय इत्यादि विषयों का बोध कराना।
- शिशुपालवध के माध्यम से काव्यगत सौन्दर्य का परिचय प्रदान करना।
- नैषधीयचरित ग्रन्थ द्वारा राजा के उत्तम गुणों से अवगत कराना।

परिणाम :

- वृद्ध व्यवहार, इन्द्रिजय आदि गुणों को विकसित कर उत्तम आचरण करता है।
- राजा के उत्तम गुणों को धारण कर समाज को उत्कृष्ट नेतृत्व प्रदान करता है।

इकाई-1 कौटिल्य अर्थशास्त्र विनयाधिकरण (अध्याय 2-4)

विद्यासमुद्देशः, त्रयी स्थापना, वार्तादण्डनीत्योः स्थापना,
(क) कविपरिचयः (ख) गद्यव्याख्या (ग) कथासारः / काव्यगतविशेषताः।

इकाई-2 कौटिल्य अर्थशास्त्र विनयाधिकरण (अध्याय 5-6)

वृद्धसंयोगः, इन्द्रियजयः (कामादिषडरीणां परित्यागः।)
(क) कविपरिचयः (ख) गद्यव्याख्या (ग) कथासारः / काव्यगतविशेषताः।

इकाई-3 नैषधीयचरितम्

महाराज्ञः नलस्य गुणवर्णनम्, नलस्य अश्ववर्णनम्
(क) कविपरिचयः (ख) गद्यव्याख्या (ग) कथासारः / काव्यगतविशेषताः।

इकाई-4 शिशुपालवधम्, प्रथमसर्ग (श्लोक 1- 35)

यथोचित आतिथ्यसत्कारः, इन्द्रेण प्रदत्तः शिशुपालवधयोजनायाः सन्देशः
(क) कविपरिचयः (ख) पद्यव्याख्या (ग) कथासारः / काव्यगतविशेषताः।

इकाई-5 शिशुपालवधम्, प्रथमसर्ग (श्लोक 36-75)

श्रीकृष्ण-शिशुपालयोः पूर्वजन्मनः वर्णनम्, श्रीकृष्णस्य स्वीकृतिः
(क) कविपरिचयः (ख) पद्यव्याख्या (ग) कथासारः / काव्यगतविशेषताः।

पाठ्यपुस्तकम् -

1. **कौटिल्य अर्थशास्त्र** - प्रकाशकः-चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
2. **नैषधीयचरितम्** - प्रकाशकः-चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
3. **शिशुपालवधम्** - प्रकाशकः-चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी

तृतीयपत्रम्- दूतवाक्योरुभङ्गमुद्राराक्षस(उत्तरार्द्धः)प्रतिमानाटकम्

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

Code- BSSAMJ-603, Credit-4

उद्देश्य-

- भासविरचित दूतवाक्यम् नामक ग्रन्थ में वर्णित नान्दी, पात्रों का परिचय, श्री कृष्ण का प्रवेश, एवं युद्धादि का बोध कराना ।
- भासविरचित उरुभङ्गम् में वर्णित पात्र परिचय दुर्योधन युद्ध उसके पश्चात् कृष्ण व पाण्डवों की मन्त्रणा का बोध कराना ।
- राक्षस व चन्द्रगुप्त की सन्धि, मलयकेतु का चन्द्रगुप्त पर आक्रमण, चाणक्य की प्रतिज्ञा पूर्ति एवं शिखा बन्ध का ज्ञान कराना ।
- (प्रतिमानाटकम्) हर परिस्थिति में सम रहने की ओर विद्यार्थी का ध्यान आकर्षित करना।

परिणाम-

- दूतवाक्य एवं उरुभङ्गम् के अध्ययन से विद्यार्थी महाभारतकालीन स्थितियों से अवगत होकर उनसे शिक्षायें लेता हुआ, स्वयं को और समाज को उन्नत बनाता है।
- मुद्राराक्षस अध्ययन से विद्यार्थी राजनीति को सरलता से जानने एवं साहित्य शैली को समझने में समर्थ हो जाता है।
- रचनानुवाद कौमुदी के अध्ययन से वाक्यरचना के साथ-साथ निबन्ध लेखन एवं संस्कृत संभाषण की कुशलता को उन्नत करता है।
- (प्रतिमानाटकम्) समता से युक्त व्यक्तित्व सही निर्णय करने में समर्थ हो जाता है।

इकाई-1 दूतवाक्यम् (भासविरचितम्)

नान्दीपाठः, पात्राणां प्रवेशः, शान्तिदूतस्य प्रवेशः,

(क) कविपरिचयः (ख) गद्यव्याख्या (ग) कथासारः / काव्यगतविशेषताः

इकाई-2 दूतवाक्यम् (भासविरचितम्)

श्रीकृष्णस्य प्रवेशः, शान्तिवार्ता, युद्धम् ।

(क) कविपरिचयः (ख) गद्यव्याख्या (ग) कथासारः / काव्यगतविशेषताः

इकाई-3 उरुभङ्गम् (भासविरचितम्)

नान्दीपाठः, पात्राणां प्रवेशः, दुर्योधनयुद्धम्, महाभारतयुद्धानन्तरं श्रीकृष्णेन सह पाण्डवानामं मन्त्रणा ।

(क) कविपरिचयः (ख) गद्यव्याख्या (ग) कथासारः / काव्यगतविशेषताः

इकाई-4 मुद्राराक्षसम् (उत्तरार्द्ध)

राक्षसस्य स्वीकृतिः, चन्द्रगुप्तस्य शासनम्, अमात्यस्य माहात्म्यम्

(क) कविपरिचयः (ख) गद्यव्याख्या (ग) कथासारः / काव्यगतविशेषताः

इकाई-5 प्रतिमानाटकम् (भासविरचितम्) - प्रथमांकः

रामः कैकेयीवचनाद् राज्ञा निर्वासितः, पुत्रशोकाद् राजा दशरथो विपन्नः, रामस्य वनगमनम्।

(क) कविपरिचयः (ख) गद्यव्याख्या (ग) कथासारः / काव्यगतविशेषताः

पाठ्यपुस्तकम्

1. **दूतवाक्यम्** (भासविरचितम्)
   प्रकाशकः-चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी ।
2. **उरुभङ्गम्** (भासविरचितम्)
   प्रकाशकः-चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी ।
3. **मुद्राराक्षसम्** - विशाखदत्तप्रणीतम्
   प्रकाशकः-चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी ।
4. **प्रतिमानाटकम्** (भासविरचितम्)

सहायकग्रन्थः- मुद्राराक्षस - विशाखदत्तप्रणीतम्। व्याख्याकार- आचार्य जगदीशचन्द्र मिश्र,
प्रकाशकः- चौखम्भा, विद्या भवन ।

चतुर्थपत्रम्- नामिकाख्यातिकौ

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

Code- BSSAMN-604, Credit-4

उद्देश्य-

- श्रीमत्स्वामिदयानन्दसरस्वती विरचित नामिक नामक ग्रन्थ से दकारान्तादि व सर्वनाम शब्दरूपों का बोध कराना।
- आख्यातिक से अदादिगण से चुरादिगण पर्यन्त धातुओं का ज्ञान कराना ।
- णिजन्त, सनन्त, यङन्त, यङ्लुगन्त तथा नामधातुओं की सिद्धि का बोध कराना ।

परिणाम-

- नामिक के अध्ययन से विभिन्न शब्दरूपों को सरलता से सिद्ध करने में समर्थ होता है।
- आख्यातिक के अध्ययन से विद्यार्थी विभिन्न धातुरूपों को धारण करने में समर्थ होता है।
- णिजन्त, यङन्त, यङ्लुगन्त, सनन्त के अध्ययन से व्याकरण शास्त्र में पण्डित्य प्राप्त करता है।
- धातुओं के विशिष्ट रूपों का प्रयोग करता हुआ अपने संभाषण में उत्कृष्टता लाता है।

इकाई-1 नामिकः (दकारान्तविषयात्-पादादिशब्दपर्यन्तम्)

सम्पद् शरद् इत्यादयः शब्दाः । पाद, दन्त इत्यादयः शब्दाः ।

इकाई-2 नामिकः (सर्वनामप्रकरणम्)

सर्व, विश्व इत्यादयः शब्दाः ।

इकाई-3 आख्यातिकः (अदादिगणतः- दिवादिगणपर्यन्तम्)

अद भक्षणे, हन हिंसागत्योः इत्यादयः धातवः । दिवु क्रीडाविजिगीषा.... इत्यादयः धातवः ।

इकाई-4 आख्यातिकः (स्वाादिगणतः- चुरादिगणपर्यन्तम्)

षुञ् अभिषवे, षिञ् बन्धने , चुर स्तेये, चिति स्मृत्याम् ।

इकाई-5 आख्यातिकः (णिजन्तसनन्तयङन्त यङ्लुगन्त नामधातु प्रक्रियाः)

भावि-भावयति, पिपठिष- पिपठिषति, बोभूय-बोभूयते,
बोभवीति- बोभोति इत्यादयः धातवः ।

पाठ्यपुस्तकम्

1. **नामिकः**- श्रीमत्स्वामिदयानन्दसरस्वती

   प्रकाशकः-वैदिक पुस्तकालय, दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर ।

2. **आख्यातिकः**- श्रीमत्स्वामिदयानन्दसरस्वती

   प्रकाशकः-वैदिक पुस्तकालय, दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर ।

पंचमपत्रम्- Research Methodology & Project/Dissertation

Code- BSSAMN-605, Credit-4

पूर्णाङ्काः-100
बाह्यमूल्याङ्कनाङ्काः-75
आन्तरिकमूल्याङ्कनाङ्काः-25
समयः-होरात्रयम्

Ojectives

- To aware the students about importance of research and to develope various perception and ideas on the relative subject.
- To aware of the students about research and its process to get qulatative research work.
- To aware the students for learning different paramteras for doing research work.

Unit -I   15 Hours

- Basic Introduction about-
- References
- Research Journals
- Research Papers (Three research papers are compulsory in journals)
- Seminars (Three seminars presentation are compulsory)

Unit -II   15 Hours

- Research Methodology
- Research Objectives
- Research Ethics
- Review

Outcomes

- Students will learn the process and method for doing research.
- Students will be able to upgrade their knowledge thourg participating the saminars, workshops and conferences.

Reference Book

- Research Methodology & Project/Dissertation Dr.Sadhvi Devpriya (Cheif Editor) Dr.Sanwar Singh Yadav (Editor). Publisher - Divya Prakashan 2025.
- Research Methodology: Ranjeet Kumar Publisher Pearson Education India 2005.

विषय विशेषज्ञ	विषय विशेषज्ञा	संकायाध्यक्षा	विभागाध्यक्ष
प्रो. ब्रजभूषण ओझा जी विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली	प्रो. शिवानी वी. डीन-शास्त्रसंकाय कर्नाटक संस्कृत	प्रो. साध्वी देवप्रिया डीन-मानविकी एवं प्राच्य विद्यासंकाय, पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार	(प्रो. मनोहर लाल आर्य) विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार